बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम व सल्लल्लाहो अ़लैका या वलीयल अ़स्र (अ़ज.) अदरिकना

बेनाए ला इलाह

चिलचिलाती धूप आफ़ताब निस्फ़ुन्नहार का जलाल अपने शबाब पर था। ऐसा लगता था जैसे अपनी तेज़ धार किरनों से ज़मीन को जला कर ख़ाक कर देगा। लेकिन ज़मीं भी आफ़ताब की हमला आवर तपिश के मद्दे मुक़ाबिल फ़ेज़ा में उसकी सोज़िश का जवाब दे रही थी। बरहना सर-ओ-पा हाथों को ज़ंजीर से ख़ुद को जकड़ कर लेबासे शाही से गुरेज़ करता हुआ एक लश्कर के साथ पैदल एक फ़क़ीर के मज़ार की तरफ़ अकबराबाद से अजमेर की तरफ़ ग़ुर्बत ज़दा की तरह सफ़र कर रहा था। वोह दौर था जब कभी साफ़ सुथरी लंबी सड़कों पर सफ़र सामने था तो कभी बंजर ज़मीन थी और कहीं ख़ार-ओ-ख़ाशाक मुसाफ़िर के लिए सद्दे राह थे मुसाफ़िर ज़िद्दी था। धुन का पक्का था लगन लगी हुई थी एक मुराद की येह कहता हुआ जा रहा था आज बादशाह फ़क़ीर की सूरत एक फ़क़ीर की बारगाह में जा रहा है। सतवत शाही को कोसों पीछे छोड़ कर मसाएले फ़क्र का मारा मोहताज है ह़ाजत है एक औलाद की। येह बर्रे सग़ीर हिन्दुस्तान का शहेन्शाह अकबर अ़ज़म था। हिन्दुस्तान की सर ज़मीन पर दूर दूर तक फैली हुई सलतनत के हर गोशे में उसी का इन्तेज़ाम-ओ-इंसेराम आईने अकबरी के तहेत अंजाम पा रहे थे। इस ज़माने में रात रात थी दिन दिन था। सुब्ह का गजर बजने के बाद बस्तियाँ जाग उठती थीं। बाज़ारों में चहेल पहेल लश्कर की छावनियों में तलवार-ओ-तीर-ओ-तबर की मश्क़ें और हलकारों की आमद-ओ-रफ़्त दिखाई देने लगती थी। ऐसी ही एक सुब्ह को वोह अ़ज़ीम शख़्सियत जिसे अकबर अ़ज़म कहते हैं एक फ़क़ीर और हाजत मंद की सूरत अपने महेलसरा को छोड़ कर सलीम चिश्ती की मज़ार की तरफ़ रवाना हो गया। जब मज़ार पर पहुंचा तो सर पर गर्दे सफ़र, चेहरे पर थकन के आसार, पसीने में शराबोर, एक फ़क़ीर के दर पर खड़ा हाथ फैलाए माँग रहा था। एक औलाद की मुराद ले कर आया हूँ ख़्वाजा (ख़ाजा)। आज मैं बादशाह नहीं हूँ आज मैं ह़ाकिम नहीं हूँ, मह़कूम हूँ, आज मैं बेबस, बेचारा, तही दस्त, तही दामन, मजबूर तेरी बारगाह में आया हूँ कि अगर तू चाहे तो मेरी सिफ़ारिश कर दे उस क़ादिरे मुतलक़ ख़ुदाए यक-ओ-तन्हा जिसकी क़ुदरत हर शै पर ग़ालिब है कि वोह इस बंदए नाचीज़ को एक औलद से नवाज़ दे।

येह वोह अकबर अ़ज़म है जिस के नौ रतन में अबुल फ़ज़्ल और फ़ैज़ी जैसी इल्मी शख़्सियतें थीं जिन का इल्मी उ़रूज ऐसा था कि क़लमदान वज़ारते ख़ारजा की वसातत से बेरूने मुल्क के मुमालिक हिन्दुस्तान को एक मज़बूत और ग़ैर मफ़तूह हुकूमत तसव्वुर करते थे। इन्शाए अबुल फ़ज़्ल किताब की शक्ल में आज भी मौजूद है उनके तबह्हुरे इल्मी की शाहिद है। आप के वालिद बुज़ुर्गवार उसी ज़माने के एक जलीलुल क़द्र शीआ आ़लिम थे।

काश ऐ काश अकबर अ़ज़म ने जिसका अ़ह्दे हुकूमत सोलहवीं व सत्रहवीं सदी के दरमियान था अपनी हसरतों के हुजूम से किसी मायूसी की अंधेरी रात में अ़क़्ल-ओ-ख़ेरद का चिराग़ ले कर अबुल फ़ज़्ल के वालिद बुज़ुर्गवार के पास आकर दो ज़ानू बैठ जाता। अदब से गुज़ारिश करता क्या कोई दीने इस्लाम का दीं पनाह है। क्या कोई तारीख़ में ऐसा वाक़ेआ मिलता है जिस ने ला इलाह की बुनियाद को इस अर्ज़े ख़ाकी पर मुस्तहकम किया हो। क्या कोई ऐसा बंदए इलाह है जो ज़मीन के साथ अफ़लाक की बस्तियों पर भी ख़ुदाए बुज़ुर्ग-ओ-बाला की तरफ़ से हाकमियत रखता हो। जो उसके बे शुमार बंदों की तक़दीर से वाक़िफ़ भी हो और उसे अ़ता करने की इजाज़त भी हो। तो शायद उसे जवाब मिलता। सुन ऐ बेबस,बेचारा,बेकस मायूस ह़सरत ज़दा शहेंशाहे हिन्द; ज़रा पलट कर एक हज़ार बरस क़ब्ल की तारीख़ को पढ़ ले मुर्सले अ़ज़म का दौरे रेसालत है। मदीना मुसलमानों की शरीअ़त और क़ानूने इलाही का मरकज़ बना हुआ है।

.....बाक़ी आख़री सफ़हे पर

इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की मदद और इमामे ज़माान की मदद

खुदावंद आ़लम ने इस दुनिया के इंसान को कमाल ह़ासिल करने के लिए बनाया है और अल्लाह ने इन्तेज़ाम भी कुछ ऐसा किया है कि अगर हज़रत इंसान उसके बनाए हुए क़ानून और तरीक़े पर चले तो बड़ी आसानी से दुनिया और आख़ेरत में कामयाबी की मंज़िलें तै कर सकता है, लेकिन जनाबे आदम अ़लैहिस्सलाम के ज़माने से आज तक दुनिया में अकसर लोगों ने न ही इलाही क़ानून को शेआ़र बनाया है और न ही तअ़्लीमाते इलाही पर पूरी तरह अ़मल किया है बल्कि उससे बढ़ कर लोगों ने गुमराही और ज़लालत का रास्ता इख़्तेयार किया है और हमेशा औलियाए इलाही, अंबिया और इमामों को शहीद किया है, चूंकि उन जराएम के बावजूद अल्लाह की सुन्नत हमेशा से येह रही है कि हेदायत और रहनुमाई का इन्तेज़ाम मुसलसल होता रहे और दुनिया में फ़साद और गुमराही न फैल सके इसी लिए मुख़्तलिफ़ क़ौमों की गुमराहियाँ हद से ज़्यादा बढ़ने के बावजूद कभी अल्लाह ने उन्हें अ़ज़ाब में मुब्तेला किया और कभी उनके तौबा करने से उन्हें मआ़फ़ कर दिया येह सिलसिला चलता रहा यहाँ तक नबीए रह़मत दुनिया के लिए रह़मत बन कर आए और २३ साल में एक ऐसा अ़ज़ीम इन्क़ेलाब बरपा कर दिया जिस की नज़ीर नहीं मिलती है लेकिन उस के बावजूद पैग़ंबरे अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की इलाही तअ़्लीमात का कीमियाई असर कुछ ही लोगों पर हुआ है और अकसर लोग शैतान के फ़रेब से ख़ाबे ग़फ़लत में सोते रहे और जब शैतान ने उनके दिलों में अपनी पूरी नस्ल तैयार कर ली तो येह लोग हेदायत का चिराग़ बुझाने के लिए करबला में आ गए लेकिन क़ादिरे मुत़लक़ ने शैतानी वसवसे और गुमराही को तालिबाने हक़ के लिए इतना वाज़ेह और रोशन करने का फ़ैसला कर लिया था कि क़यामत तक कोई उस पर गर्द भी डाल न सके इसी लिए इस इन्क़ेलाब की बुनियाद ऐसे फ़ितरी अनासि़र पर रखी कि दुनिया का हर इंसान इस पर सरसरी नज़र डालने के बावजूद हक़ माने बग़ैर नहीं रह सकता है और उसके दिल में ज़ुल्म और फ़साद के ख़ेलाफ़ ऐसी चिंगारी पैदा कर देता है जो हर शैतानी फ़साद का गला घोंट देती है। इसी वजह से करबला के मैदान में जिस अ़ज़ीम इन्क़ेलाब की बुनियाद डाली गई थी उसी मैदान में उस अ़ज़ीम इन्क़ेलाब का भी एअ़्लान किया गया था जो दुनिया को तमाम ज़ुल्म-ओ-जौर से पाक करके अ़द्ल-ओ-इंसाफ़ का परचम लहरा देगा।

ज़ेरे नज़र मज़मून में ताएराना नज़र उस इन्क़ेलाब की बुनियाद पर डालने की एक अदना सी कोशिश है ताकि अ़ज़ीम इन्क़ेलाब के इन्तेज़ार करने वालों की ख़िदमत में येह गोश गुज़ार कराया जा सके कि इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के मिशन और इन्क़ेलाब को याद किये बग़ैर, असहाबे हुसैन की ख़ुसूसियात को अपनाए बग़ैर कोई शख़्स उस अ़ज़ीम इन्क़ेलाब में सहीम नहीं हो सकता है उसकी दलील इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम का येह इर्शादे गेरामी है जो उन्होंने अपने जद्दे बुज़ुर्गवार पैग़ंबरे अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से नक़्ल किया है। इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने करबला में अपने असह़ाब से फ़रमाया:

फ़क़द अख़्बरनी जद्दी अन्ना वलदेयलहुसैन अ़लैहिस्सलामो युक़्तलो बेतिफ़्फ़े कर्बलाअ, वह़ीदन अतशानन, फ़मन नस़रहू फ़क़द नस़रनी व नस़रा वलदहुलक़ाएम अ़लैहिस्सलाम

(फ़वाएदुल मशाहिद, स.४६६)

ब तह़क़ीक़ मेरे जद्द ने मुझे ख़बर दी है कि मेरा बेटा हुसैन करबला में, ग़ुर्बत-ओ-तन्हाई और प्यासा शहीद किया जाएगा। पस जिस ने उसकी मदद की यक़ीनन उसने मेरी और उसके फ़र्ज़न्द क़ाएम अ़लैहिस्सलाम की मदद की है यअ़्नी इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के असह़ाब ख़ुद इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम के असह़ाब-ओ-अंसार हैं, गोया करबला के मैदान में इमामे हुसैन अ़लैहिस्सलाम के हम रकाब

जंग करने वाले ने इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की मदद के लिए क़दम आगे बढ़ाया है।

अस्हाबे हुसैन अलैहिस्सलाम की ख़ुसूसियात

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के अस्हाबे बा वफ़ा ने अपने वलीए नेअ्मत के लिए इंसानी ज़िंदगी का सब से क़ीमती सरमाया यअ्नी अपनी जान को निसार कर दिया और शोहदा के सरदारों के ज़ुमरे में शामिल हो गए। अमीरुल मोमेनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

व ख़ैरुलख़ल्क़े व सय्येदोहुम् बअ्दल हसने अलैहिस्सलामो इब्नी, अख़ूहुल हुसैना अलैहिस्सलामुलमज़्लूमो बअ्दा अख़ीहे, अल्मक़्तूलो फ़ी अर्ज़े कर्बिन् व बलाइन, अला अन्नहू व अस्हाबहू मिन सादातिश्शोहदाए यौमलक़ियामते।

(बेहार जिल्द ३६, स. २५३)

बेहतरीन मख़्लूक़ और उनका सरदार मेरा बेटा हसन उनके भाई हुसैन है जो अपने भाई के बाद मज़लूम होगा। बला-ओ-मुसीबत की सर ज़मीन करबला में शहीद किया जाएगा। जान लो कि वोह और उनके असहाब क़यामत के दिन शहीदों के सरदारों की फ़ेहरिस्त में होंगे।

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और उनके अस्हाब की शहादत से पहले तक, जनाब हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब का लक़ब सय्यदुश्शोहदा था और ६१ हिजरी के आशूरा के बाद येह लक़ब आम तौर से इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के लिए इस्तेअ्माल होने लगा। और इमाम के अस्हाब भी इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के सदक़े में शराफ़त और सरदारी के मंसब दार हैं और शोहदा के सरदारों की फ़ेहरिस्त में शामिल हो जाते हैं।

चूँकि उन लोगों ने अपनी जान, मोहब्बत, मअ्रेफ़त और इख़्लास से अपने इमाम की मदद करते हुए अपनी क़ुर्बानियों को पेश किया इस लिए अपने इमाम की मदद में सब से अज़ीम रुत्बे को कस्ब कर लिया।अमीरुल मोमेनीन अलैहिस्सलाम भी अह्लेबैत अलैहिस्सलाम की नुसरत को सब से अज़ीम और बलंद मर्तबा और नुसरत उनके दुश्मनों से जंग करने के बारे में ही फ़रमाते हैं:

मन अहब्बना बेक़ल्बेही व अआनना बेलेसानेही व क़ातला मअना अअ्दाअना बेयदेही फ़हुम मअना फ़ी दरजतेना। व मन अहब्बना व अआनना बेलेसानेही वलम युक़ातेला मअना अअ्दाअना फ़होवा अस्फ़लो मिन ज़ालेका बेदरजतिन।

(बेहार, जिल्द .२७, स. ८९, ह. ३९)

जो शख़्स हमें दिल से चाहता हो और अपनी ज़बान से मदद करता हो और हमारे साथ, हमारे दुश्मनों से लड़े। पस क़यामत में हमारे साथ और हमारे दरजे में होगा। और जो शख़्स हम को चाहता है और अपनी ज़बान से मदद करता है लेकिन हमारे साथ हमारे दुश्मनों से जेहाद न करे, वोह निचले दरजे में होगा।

इस हदीस से नतीजा निकलता है कि दुश्मनाने अह्लेबैत से लड़ना और अपनी जान क़ुर्बान करना इमाम की मदद करने में सब से अज़ीम रुत्बा-ओ-मंज़ेलत है और इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के अस्हाब इस सिलसिले में सब से बलंद-ओ-बाला हैं।

जो लोग ग़ैबते इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के ज़माने में अपनी ज़िंदगी, शब-ओ-रोज़ गुज़ार रहे हैं, उन्हें अल्लाह से दुआ करना चाहिये कि अल्लाह उन्हें एक मअ्रेफत अता कर दे जिस से वोह समझ जाएं कि हम इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के ज़माने में नहीं थे लेकिन हम उस रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ पाने के लिए हमा जेहत आमादा हैं।

आज के ज़माने में इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की नुसरत

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ६१ हिजरी में शहीद हुए। हमें आज १३७२ साल गुज़र चुके हैं फिर भी हम इमाम की नुसरत कर सकते हैं और उस रास्ते से हम इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम की नुसरत करने वालों में शुमार होंगे। एक

रास्ता इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की नुसरत का उन लोगों के लिए जो करबला में नहीं थे येह है कि दुनिया में अपने दिल को इमाम अ़लैहिस्सलाम की मोहब्बत से लबरेज़ कर लें और इमाम अ़लैहिस्सलाम की गहरी मोहब्बत से उस अ़ज़ीम रुत्बे को पा लें।

जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी पैग़ंबरे अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के बावफ़ा सहाबियों में से एक थे जिन्होंने इमाम हैसन अ़लैहिस्सलाम की इमामत का ज़माना देखा था लेकिन आ़शूरा के दिन इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के लश्कर में शरीक होने की तौफ़ीक़ उनको नहीं मिली थी। जाबिर उसी साल चेहलुम में इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की क़ब्र की ज़ेयारत का शरफ़ पाते हैं चूँकि ना बीना थे इस लिए अ़तीया कूफ़ी से दरख़ास्त किया कि मेरा हाथ इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की क़ब्रे मुबारक पर रख दो,फिर ग़म-ओ-अंदोह की शिद्दत की बेना पर बेहोश हो गए और क़ब्र पर गिर पड़े, जब होश आया तीन बार या हुसैन कहा और फिर कहते हैं:

हबीबुन ला युजीबो हबीबहू

वोह दोस्त जो अपने दोस्त को जवाब नहीं देता है।

फिर इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम से मुख़ातिब हो कर कहा और शोहदा की रूहों को सलाम किया और कहा: उस अल्लाह की क़सम जिस ने पैग़ंबर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम को हक़ के साथ मबऊस किया हम आप के साथ जिस चीज़ में आप दाख़िल हुए, शरीक हो गए।

अ़तीया ने जाबिर से पूछा! हम ने दश्त, बयाबान का सफ़र नहीं किया और न ही हम ने तलवार चलाई जब कि उनके बदन और सर में जुदाई और उनके और उनके बच्चों के दरमियान जुदाई हो गई और उनकी औरतों ने अपने शौहरों को खो दिया। पस हम कैसे उनके साथ शरीक हो गए?

जाबिर ने जवाब में कहा:

या अ़तीयतो समेअ़तो हबीबी रसूलल्लाहे सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **यक़ूलो: मन अह्ब्बा क़ौमन होशेरा मअ़हुम, व मन अह्ब्बा अ़मला क़ौमिन अशरक फ़ी अ़मलेहिम...**

ऐ अ़तीया मैंने अपने हबीब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम को कहते हुए सुना है कि: जो शख़्स किसी क़ौम को पसंद करे, उनके साथ महशूर होगा और जो शख़्स किसी गरोह के काम को पसंद करेगा तो उनके अ़मल में शरीक होगा। फिर मज़ीद कहते हैं:

वल्लज़ी बअ़सा मोहम्मदन सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **बिल्हक़्क़े इन्ना नीयती व नीयता अस्हाबी अ़ला मा मज़ा अ़लैहिलहुसैनो अ़लैहिस्सलामो व अस्हाबोहू**

(बेहार, जिल्द. १०१, स. १९६)

क़सम उस ख़ुदा की जिस ने पैग़ंबरे अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम को हक़ के साथ मबऊस किया, बेशक मेरी और मेरे दोस्तों की नीयत वैसी नीयत है जो इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम और उनके असहाब की थी।

जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी ने पैग़ंबरे अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के इर्शादे गेरामी से अल्लाह का एक क़ानून बयान किया है। मोहब्बत, एक क़ल्बी और इख़्तेयारी काम है जो इंसान को अपने महबूब तक पहुंचा देती है। इस लेहाज़ से जो लोग इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के साथ करबला में नहीं थे जिस ज़माने में भी हों वोह अपनी नीयत और मोहब्बत से इमाम अ़लैहिस्सलाम के साथ हो सकते हैं यहां तक कि इमाम अ़लैहिस्सलाम के हम रकाब जंग करने का सवाब भी हासिल कर सकते हैं। यअ़्नी दुनिया और आख़ेरत में अस़हाबे इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की फ़ेहरिस्त में शामिल हो सकते हैं।लेकिन अहम नुक्ता यहाँ पर येह है कि उस क़ानूने इलाही को तसलीम करे यअ़्नी दिल-ओ-जान से उस सुन्नते इलाही पर यक़ीन करे और उस सिलसिले में अल्लाह के वअ़्दे पर हुस्ने ज़न रखे ताकि अपनी नीयत के ज़रीए इमाम के

बावफ़ा और नुसरत करने वाले अस़हाब में शामिल हो जाए।

इस बात में मज़ीद यक़ीन पैदा करने के लिए एक और ह़दीस इमाम स़ादिक़ अ़लैहिस्सलाम की नक़्ल करते हैं इमाम स़ादिक़ अ़लैहिस्सलाम ६१ ह़िज्री में पैदा नहीं हुए थे बल्कि इमाम बाक़िर अ़लैहिस्सलाम इस सफ़र में तक़रीबन पाँच साल के थे। उस के बावजूद इमाम स़ादिक़ अ़लैहिस्सलाम ख़ुद और अपने तमाम शीओं को करबला के शोहदा की फ़ेहरिस्त में क़रार देते हैं और कहते हैं:

इन्नी लौ उख़ेजो नफ़्सी मिन शोहदाइत् त़ोफ़ूफ़े वला अअ़द्दो सवाबी अक़ल्ला मिन्हुम लेअन्ना मिन नीयतिन्नुस्रता लौ शहिद्तो ज़ालेकलयौमा व कज़ालेका शीअ़तोना होमुश्शोहदाओ व इन मातौ अ़ला फ़ोरोशेहिम।

(मिकयालुल मकारिम, जिल्द २, स. २२८)

मैं अपने आप को करबला के शोहदा की फ़ेहरिस्त से अलग नहीं समझता और न मैं अपने सवाब को उन से कम समझता हूँ, क्योंकि मेरी नीयत येह है कि मैं अगर उसी रोज़ को पा लेता तो ज़रूर इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की मदद करता। इसी तरह हमारे शीआ शोहदा में शुमार होंगे अगरचे उन्हें अपने बिस्तर पर ही मौत आई हो।

इसी तरह इमाम रज़ा अ़लैहिस्सलाम ने शबीब के बेटे से फ़रमाया:

जो पहली मोह़र्रम को इमाम की ख़िदमत में पहुँचा था उसी तरह लिखाया:

या इब्ना शबीब: इन्ना सर्रका अन यकूना लका मिनस्सवाबे मिस्लो मा लमिनिस् तुश्हेदा मअ़ल् हुसैने अ़लैहिस्सलामो फ़कुल् ह़त्ता मा ज़कर्तोहू या लैतनी कुन्तो मअ़हुम फ़अफ़ूज़ो फौज़न अ़ज़ीमन

(बेहार, ४४, स. २८६)

ऐ शबीब के फ़रज़ंद! अगर ख़ुश होना चाहते हो कि तुम्हें भी इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के साथ शहीद होने वाले बावफ़ा सह़ाबियों का सवाब मिल जाए तो जब भी उन की याद आए तो कहो: ऐ काश मैं भी उनके साथ होता तो अ़ज़ीम कामयाबी पा लेता।

इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम और उनके अस़हाब का नअ़्रा

ज़हूर के ज़माने में इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की एक अहम ज़िम्मेदारी इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के दुश्मनों से इन्तेक़ाम लेना है येह मुआमेला इतना अहम है कि इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम का एक बुनियादी नअ़्रा क़रार दिया गया है। नाह़ियए मुक़द्दस की एक ज़ेयारत में हम इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम से इस तरह मुख़ातिब होते हैं।

अस्सलामो अ़लल इमामिल आलेमिलग़ाएबे मिनल अब्सारे वल ह़ाज़ेरे फिल अम्सारे, वल ग़ाएबे मिनल अ़ोयूने वल ह़ाज़ेरे फ़िल् इ़फ़्कारे, बक़ीयतिल अख़्यारिल वारिसे ज़लफ़िक़ारे, अल्लज़ी यज़हेरो फ़ी बैतिल्लाहिल ह़रामे ज़िलइ़स्तारे व योनादी बेशेअ़ारे या लेसारातिल् हुसैने, अनत्तालेबो बिल औतार। अना क़ास़ेमो कुल्ले जब्बारिलक़ाएमुल मुन्तज़रुब्नुल ह़सने अ़लैहे व आलेही व अफ़्ज़लुस्सलामे

(बेहार, १०२, स. १९३, स. १९४)

आ़लिम-ओ-आगाह और नज़रों से पोशीदा इमाम पर सलाम जो शहरों में मौजूद है, नज़रों से पोशीदा और फ़िक्रों में मौजूद, नेक लोगों का ज़ख़ीरा, ज़ुल्फ़ेक़ार का वारिस, वही जो अल्लाह के पर्दादार घर से ज़ाहिर होगा और ख़ूने हुसैन अ़लैहिस्सलाम के इन्तेक़ाम का नअ़्रा देगा और (कहेगा) कि मैं ख़ूने ना ह़क़ का क़ेस़ास़ लेने वाला हूँ। मैं हर ज़ालिम-ओ-जाबिर को ख़त्म कर दूँगा और मैं वोह क़ाएम हूँ जिस का लोग इन्तेज़ार कर रहे हैं, इमाम ह़सन अ़स्करी अ़लैहिस्सलाम का बेटा,उन पर और उनके पाकीज़ा ख़ानदान पर दुरूद-ओ-सलाम हो।

नअ्रा आम तौर से हर शख़्स के मक़सद को उजागर करता है, ज़हूर के वक़्त इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम का ख़ूने इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के इन्तेक़ाम का नअ्रा, अल्लाह और इमाम अलैहिस्सलाम के नज़दीक उसकी अहमियत को उजागर करता है। इमाम अलैहिस्सलाम के अस्हाब की भी इमाम अलैहिस्सलाम की इत्तेबाअ् में एक सिफ़त येह है कि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के ख़ून का बदला लेने के लिए खड़े हो जाएंगे और अल्लाह की राह में शहीद होने की तौफ़ीक़ की आर्ज़ू है। इमाम सादिक़ अलैहिस्सलाम उनकी सिफ़ात बताते हुए फ़रमाते हैं:

यतमन्नौना अन् युक़ततलू फ़ी सबीलिल्लाहे, शेआरोहुम या लेसारातिल हुसैने... बेहिम यन्सोरुल्लाहो इमामलहक़्क़े।

(बेहार, जिल्द ५२ स॰ ३०८, ह॰ १८३)

अल्लाह की राह में शहीद होने की तमन्ना करेंगे। या लेसारातिल हुसैन का नअ्रा बुलंद करेंगे। अल्लाह उनके ज़रीए इमाम बरहक़ अलैहिस्सलाम की मदद-ओ-नुसरत करेगा। या लेसारातिल हुसैन के मअ्नी इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के ख़ून का बदला लेने के लिए गिरिया करेंगे। गोया येह नअ्रा इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के अज़ीम इन्क़ेलाब का मज़हर है। इस लेहाज़ से इमाम ज़माना अलैहिस्सलाम के बावफ़ा सहाबी बनने के लिए ज़रूरी है कि हम इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और उनके बावफ़ा अस्हाब की मअ्रेफ़त ज़्यादा से ज़्यादा हासिल करें ताकि हमें पता चल सके कि उस ख़ूने नाहक़ के बहने की अहमियत अल्लाह की निगाहों में क्या है, यहां तक कि अल्लाह ने तमाम अंबिया, औलिया और औसिया और अच्छे लोगों से उस ख़ूने नाहक़ का बदला लेने के लिए इस अज़ीम इमाम का वअ्दा किया। पस ज़रूरी है कि हम इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के बावफ़ा अस्हाब से मअ्रेफ़त, मोहब्बत, इख़्लास, फ़ेदाकारी को इमाम अलैहिस्सलाम की राह में क़ुर्बान कर देना सीखें।

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के अस्हाब के हालात

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के अस्हाब जब तक ज़िंदा थे उन्होंने येह बर्दाश्त न किया कि आले रसूल अलैहिमुस्सलाम की कोई औलाद मैदाने कारज़ार में जाए, बल्कि अपनी और अपने बच्चों की जान इमाम अलैहिस्सलाम और उनके बच्चों पर क़ुर्बान कर दी, उसके साथ साथ हमेशा अपनी वफ़ादारी का एअ्लान करते रहे और अमलन भी दिल से मोहब्बत का इज़हार किया। मिसाल के तौर पर चंद को ज़िक्र करते हैं ताकि मअ्लूम हो सके कि वाक़ेअन जो लोग अपने इमाम की मदद इस तरह करना चाहते हैं उनकी नीयत, अक़ीदा और मअ्रेफ़त किस हद तक मज़बूत होना चाहिये। जब आशूर कि शब आई इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने अपने अस्हाब को इकट्ठा किया और अल्लाह की हम्द-ओ-सना करने के बाद उनसे फ़रमाया: अस्हाब आप से बेहतर नहीं जानता हूँ और अपने अह्लेबैत अलैहिस्सलाम से बेहतर और नेक किसी को नहीं जानता हूँ अल्लाह तुम लोगों को मेरी तरफ़ से जज़ाए ख़ैर दे, रात की तारीकी ने तुम सब को घेर लिया है पस उसको अपनी सवारी समझो और तुम में से हर एक मेरे अह्ले बैत अलैहिस्सलाम में से किसी का हाथ पकड़ ले और रात की तारीकी में चला जाए और मुझ को इस क़ौमे नाबकार के साथ छोड़ दे क्योंकि उन लोगों को मेरे अलावा किसी से काम नहीं है।

इमाम अलैहिस्सलाम के भाईयों और बच्चों और भांजों ने कहा: क्यों हम येह काम करें? इस लिए कि आप के बअ्द ज़िंदा रह जाएं? ख़ुदा की क़सम हम हरगिज़ येह काम नहीं करेंगे। सब से पहले क़मरे बनी हाशिम और बअ्द में दूसरों ने इस तरह इमाम से ख़ेताब किया।

और जब अस्हाब की नौबत पहुंची तो मुस्लिम बिन औसजा ने कहा: हम आप को तन्हा नहीं छोड़ेंगे, जब दुश्मन ने आप को घेर रखा है, न आप से मुँह मोड़ेंगे और न ही जाएंगे? नहीं ख़ुदा की क़सम, अल्लाह मुझे वोह दिन न दिखाए, मैं ऐसा नहीं करूंगा सिवाए इसके कि मैं अपने नेज़े को उनके सीनों में तोड़ दूँ। और जब तक मेरे

हाथों में शमशीर है उनसे लड़ूंगा और अगर बग़ैर अस्लेह़ा के हो जाऊँगा तो उनसे पत्थर से जंग करूँगा और आप से उस वक़्त तक जुदा न हूँगा जब तक अपनी जान आप के क़दमों में निसार न कर दूँ।

उसके बअ्द सअ़ीद इब्ने अ़ब्दुल्लाह ह़नफ़ी उठे और फ़रमाया: नहीं ख़ुदा की क़सम! ऐ पैग़ंबर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के फ़रज़ंद! यहाँ तक कि अल्लाह को मअ़्लूम हो जाए कि हम पैग़ंबर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की वसीयत को आप के सिलसिले में पासदारी और ह़ेफ़ाज़त की है। और अगर जान जाऊँ कि आप की रकाब में शहीद हो जाऊँगा और फिर ज़िंदा करेंगे और मेरे बदन के टुकड़े को हवा के ह़वाले कर देंगे और अश्क़िया मेरे साथ येह करेंगे फिर भी आप से जुदा नहीं होऊँगा यहां तक कि अपनी जान आप के क़दमों में निछावर कर दूँ जब कि यहां पर तो एक से ज़्यादा बार क़त्ल नहीं किया जाएगा और उसके बअ्द हमेशा के लिए अ़ज़मत-ओ-बुज़ुर्गी ह़ासिल होगी, पस क्यों मैं येह काम न करूँ? फिर ज़ुहैर बिन क़ैन उठे और कहा: अल्लाह की क़सम ऐ पैग़ंबरे अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के फ़रज़ंद! मैं चाहता हूँ कि हज़ार बार क़त्ल किया जाऊँ और ज़िंदा हो जाऊँ और मेरे क़त्ल होने से आप अ़लैहिस्सलाम और आप अ़लैहिस्सलाम के भाई और बच्चे और आप अ़लैहिस्सलाम के अह्ले बैत अ़लैहिमुस्सलाम बच जाएँ (मज़ीद के लिए लुहूफ़, स॰ ९१ स॰ ९३ मुलाह़ेज़ा कर सकते हैं।

आप ने इन अल्फ़ाज़ पर ग़ौर किया कि किस तरह इमाम हुसैनअ़लैहिस्सलाम के अस़ह़ाबे बा- वफ़ा अपने इमाम से कह रहे थे कि हज़ारों बार आप के लिए और आप के अह्ले बैत के लिए शहीद हो जाएँ और येह शहादत हमारे लिए ही है। आज कौन है जो सच्चाई से कह सके हम अह्ले बैत अ़लैहिमुस्सलाम के लिए अपनी जान-ओ-माल सब कुछ क़ुर्बान करने के लिए आमादा हैं? यक़ीनन उन लोगों के दिलों में अपने इमाम अ़लैहिस्सलाम की मोह़ब्बत बहुत ज़्यादा थी। इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के अस़ह़ाब इस त़रह़ थे और उन्होंने आ़शूरा के दिन साबित किया इस तरह कि जान देने के लिए एक दूसरे पर सबक़त करते थे। मसलन सअ़ीद इब्ने अ़ब्दुल्लाह ह़नफ़ी से जब ज़ोह्र के वक़्त इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मेरे सामने खड़े हो जाओ ताकि मैं नमाज़े ख़ौफ़ पढ़ सकूँ। इमाम अ़लैहिस्सलाम अपने बअ्ज़ अस़ह़ाब के साथ नमाज़ पढ़ने जैसे ही खड़े हुए तो सअ़ीद इमाम की त़रफ़ आता हुआ हर तीर अपने सीने पर लेते यहाँ तक कि ज़मीन पर गिर पड़े बल्कि इमाम अ़लैहिस्सलाम के दुश्मनों पर लअ़्नत कर रहे थे और कहते थे: परवरदिगार अपने पैग़ंबर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम को मेरा सलाम पहुँचा दे और उन्हें मेरे ज़ख़्म से आगाह कर दे। पैग़ंबर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के फ़रज़ंद की मदद का अज्र-ओ-सवाब चाहता हूँ। फिर इस दुनिया से रुख़्सत हो गए। बअ्ज़ रवायतों में है कि इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की त़रफ़ रुख़ किया और कहा: ऐ फ़रज़ंदे पैग़ंबर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम क्या मैं ने अपना अ़ह्द पूरा किया? तो इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: हाँ तुम जन्नत में मेरे आगे होगे।

उसके अ़लावा आप मक़ातिल में अस़ह़ाबे बा वफ़ा के भी कलमात इख़्लास और मोह़ब्बत से भरे हुए कलमात मुलाहेज़ा कर सकते हैं जो उनकी मोहब्बत, मअ़्रेफ़त, वफ़ादारी की बेहतरीन दलील है।

इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की नुस़रत, ज़ेयारते हुसैन अ़लैहिस्सलाम के ज़रीए

इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की नुस़रत की एक निशानी इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की ज़ेयारत का शौक़ और लगाव है और येह लगाव इस बात की अ़लामत है कि अल्लाह उसको नेकी देना चाहता है। इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

मन अरादल्लाहो बेहिलख़ैरा, क़ज़फ़ फ़ी क़ल्बेही हुब्बलहुसैने अ़लैहिस्सलामो व हुब्बा ज़ेयारतेही।

(कामेलुज़्ज़ेयारात, बाब ५५, ह॰ ३)

अल्लाह अगर किसी के लिए नेकी और अच्छाई चाहता है तो उसके दिल में इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम और उन की ज़ेयारत की मोहब्बत-ओ-शौक डाल देता है।

मुमकिन है इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के पाकीज़ा रौज़े की ज़ेयारत का शरफ़ किसी को सालों साल शौक़ रखने के बअ्द भी न मिले। लेकिन येह शौक़ और लगाव इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम से मोहब्बत और दिली लगाव की अ़लामत है और दिल से इमाम अ़लैहिस्सलाम की मदद करने की निशानी और अ़लामत है।

बहर हाल इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की क़ब्र की ज़ेयारत, अल्लाह के हुक़ूक़ में से एक हक़ बंदों के ज़िम्मे है जो इंसानों के रात दिन इबादत करने से पूरा नहीं होता है इमाम स़ादिक़ अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

लौ अन्ना अहदकुम हज्जा अ़ल्फ़ा हज्जतिन सम्मा लम याते क़ब्रलहुसैनिब्ने अ़लीयिन अ़लैहिमस्सलामो, लकाना क़द तरका हक़्क़ा मिन हुक़ूक़िल्लाहे, व सोएला अ़न ज़ालेका, फ़क़ाला अ़लैहिस्सलामो हक़्कुल हुसैने अ़लैहिस्सलाम मफ़रूज़ुन अ़ला कुल्ले मुस्लेमिन

(कामेलुज़्ज़ेयारात, बाब ७८, ह॰ ६)

अगर तुम में से कोई हज़ार हज करे लेकिन इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की क़ब्र की ज़ेयारत न करे तो उस ने अल्लाह के हुक़ूक़ में से एक हक़ को तर्क कर दिया है और उस कोताही के लिए उससे सवाल किया जाएगा, फिर फ़रमाया: इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के हक़ की अदाएगी हर मुसलमान पर वाजिब है।

इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के क़ब्र की ज़ेयारत, अल्लाह, रसूल और अह्ले बैत का हक़ है, उसमें कोताही करना अह्ले बैत अ़लैहिमुस्सलाम के हक़ की अदाएगी न करना अल्लाह अगर किसी के लिए नेकी और अच्छाई चाहता है थो उसके दिल में इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम और उनकी ज़ेयारत की मुहब्बत-ओ-शौक़ डाल देता है ।

और हुक़ूक़ में शुमार होता है। इमाम स़ादिक़ अ़लैहिस्सलाम का एक स़हाबी कहता है। मैंने पूछा आप की नज़र में वोह शख़्स कैसा है जो इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की ज़ेयारत करने पर क़ादिर है लेकिन ज़ेयारत नहीं करता है? इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: मेरी नज़र में इस त़रह़ का शख़्स पैग़ंबर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम और हम अह्ले बैत अ़लैहिमुस्सलाम की ना फ़रमानी की है और हमें छोड़ दिया है।

अह्ले बैत अ़लैहिमुस्सलाम के ह़क़ से मुँह मोड़ना गुनाहे कबीरा और सज़ा जहन्नम है। एक शख़्स ने इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम से पूछा कि अगर कोई शख़्स बग़ैर किसी उ़ज़्र के इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के क़ब्र की ज़ेयारत को न जाए तो उसका क्या हुक्म है? इमाम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

हाज़ा रजोलुन मिन अह्लिन्नारे

(कामेलुज़्ज़ेयारात, बाब ४, ह॰ ३)

येह शख़्स जहन्नमी है।

एक और ह़दीस में इमामे पंजुम अ़लैहिस्सलाम से इस त़रह़ वारिद हुआ है:

अगर लोगों को इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की ज़ेयारत की फ़ज़ीलत का पता होता तो शौक़ से जान निकल जाती और ह़सरत में उनकी रूह़ छलनी हो जाती।

येह चंद चीज़ें हैं जिन से हम इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की मदद करके इमामे ज़माना अ़लैहिस्सलाम की मदद कर सकते हैं। आख़िर में ख़ुदावंद आलम की बारगाह में दस्त ब दुआ हूँ कि अल्लाह इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम और इमाम ज़माना अ़लैहिस्सलाम के नास़िरों में शुमार करे और इमाम अ़लैहिस्सलाम के ज़हूरे पुर नूर में तअ्जील फ़रमाए।

आमीन सुम्मा आमीन

शर्हे ज़ियारते नाहिया

(अल मुंतज़र मोहर्रमुल हराम ख़ुसूसी शुमारा १४३२ हि॰,पिछले शुमारे से जारी)

अस्सलामो अ़लल जोयूबिल्मुज़र्रजाते

सलाम हो चाक गरीबानों पर।

ज़ियारते नाहिया के इस फ़िक़रे में दो लफ़्ज़ 'जोयूब'और 'मुज़र्रजात'। जोयूब जम्अ है जयब का और जयब के मअ्नी हैं गरीबान और मुज़र्रजात का माद्दा है ज़रज और येह बाबे तफ़अील में इस्मे मफ़ऊल जम्अ मोअन्नस सालिम है। हर्फ़ 'र' पर कसरह (ज़ेर) लगाना ग़लत है क्योंकि उससे लफ़्ज़ के मअ्ना बदल जाते हैं और उसका मत़लब होगा गरीबान चाक करने वालियाँ। लेहाज़ा ख़याल रखा जाए कि मुज़र्रजात पढ़ें न कि मुज़र्रेजात (जैसा कि कुछ किताबों में छपा है और येह इश्तेबाह है)। बहर कैफ़,यहाँ इमाम अ़स्र अ़लैहिस्सलाम सलाम भेज रहे हैं उन गरीबानों पर कि जिन्हें चाक किया गया। अल्लाहो अकबर, अब येह नहीं कह सकते कि यहां हज़रत हुज्जत अ़लैहिस्सलाम की मुराद कौन है लेकिन ज़ाकेरीने हुसैने मज़्लूम अ़लैहिस्सलाम अक्सर मजालिसों में पढ़ा करते हैं कि जब इमाम हसन मुज्तबा अ़लैहिस्सलाम का यतीम क़ासिम मक़तल के लिए रवाना हो रहा था उस वक़्त हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने उनका गरीबान चाक किया। जब बच्चे ने चचा के इस फ़ेअ्ल की मस़लेहत दरयाफ़्त की, हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया,बेटा,येह यतीमों की अ़लामत है। या येह भी मुमकिन है इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम की मुराद तमाम शोहदा हैं कि जिन की शहादत के बअ्द उनके गरीबानों को मलाअ़ीन ने चाक किया। वल्लाहो व हुज्जतोहू अअ्लम बिस़्सवाब.

अस्सलामो अ़लश्शेफ़ाहिज़्ज़ाबेलाते

सलाम हो मुरझाए हुए होंटों पर

शफ़ा जम्अ है शफ़ता की जिस के मअ्नी हैं होंट और ज़ाबेलात यअ्नी मुरझाए हुए। येह वोह होंट थे कि जिन का सरवरे काएनात सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम बोसा लिया करते थे।

शेख़ मुफ़ीद (रह.) किताबुल् इर्शाद में तह़रीर फ़रमाते हैं:

फवोज़ेअ़र्रअ्सो बैना यदैहे यन्ज़ोरो इलैहे व यतबस्समो व बेयदेही क़ज़ीबुन यज़्रेबो बेही सनायाहो व काना एला जानेबेही ज़ैदुब्नो अर्क़मा स़ाहेबो रसूलिल्लाहे सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **व होवा शैख़ुन कबीरुन फ़लम्मा रआहो यज़्रेबो बिल क़ज़ीबे सनायाहो क़ालर्फ़अ् क़ज़ीबका अ़न हातैनिश्शफ़तैने फ़वल्लाहिल्लज़ी ला एलाहा इल्ला होवा लक़द रऐतो शफ़तै रसूलिल्लाहे** सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम **अ़लैहेमा मा ला ओह़सीहे योक़ब्बेलोहोमा सुम्मन्तह़बा बाकेयन**

(बेहारुल अनवार, जिल्द ४५, स॰ ११६)

जब इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम का सरे अक़दस इब्ने ज़ेयाद (लअ्नतुल्लाह अ़लैह) के सामने रखा हुआ था, वो मल्ऊन उसे देख देख कर मुस्कुरा रहा था। फिर वोह लकड़ी से इमाम अ़लैहिस्सलाम के मुबारक होंटों की बे हुर्मती

करने लगा। उस वक़्त वहाँ ज़ैद इब्ने अरक़म सहाबिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम मौजूद थे और बूढ़े थे। जब उन्होंने येह क़बीह मंज़र देखा तो उन्होंने इब्ने ज़ेयाद को डाँटा;अपनी लकड़ी उन होंटों पर से हटा, उस ख़ुदा की क़सम कि जिस के अलावा और कोई मअ्बूद नहीं, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम को उन होंटों का इतने मर्तबा बोसा लेते हुए देखा कि जिस का शुमार नहीं कर सकता। येह कह कर ज़ैद गिरिया करने लगे।

अस्सलामो अलन्नोफ़ूसिल् मुस्तलमाते

सलाम हो कर्ब-ओ-अंदोह में घिरे हुए चूर चूर नफ़्सों पर।

नुफ़ूस नफ़्स की जम्अ है जिस के मअ्नी हैं जान, रूह वग़ैरह और अलमुस्तलमाते का मसदर है इस्तेलाम जिस का मतलब इस तरह बयान किया गया है,**एज़ा ओबीदा क़ौमन मिन अस्लेहिम क़ीलस्तोलेमू** जब किसी क़ौम को उसकी जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया जाता है तो कहते हैं उसका इस्तेलाम हो गया।

(लेसानुल अरब, इब्ने मंज़ूर,जिल्द १२,स॰ ३४०)

बाबे इफ़्तेआल का इस्मे मफ़्ऊल है और जम्अ मोअन्नसे सालिम। बनी उमय्या ने करबला में वोह मज़ालिम ढाए गोया कि बनी हाशिम को जड़ से उखाड़ कर फेंक देने की कोशिश की।

अस्सलामो अलल अर्वाहिल मुख़्तलसाते

सलाम हो उन रूहों पर जिन के जिस्मों को धोके से तहे तेग़ किया गया।

रूह की जम्अ है अरवाह यानी रूहें और मुख़्तलसात का माद्दा है ख़लस बाबे इफ़्तेआल का इस्मे मफ़्ऊल और जम्अ मोअन्नसे सालिम। सलाम हो उन रूहों पर जिन को धोके से क़त्ल किया गया है। मेहमान बुला कर क़त्ल किया गया नुसरत-ओ-मदद का वअ्दा दे कर शहीद किया गया।

अस्सलामो अलल अज्सादिल आरियाते

सलाम हो बे गोर-ओ-कफ़न नअ्शों पर।

अज्साद जसद की जम्अ जिस से मुराद जिस्म है और आरियात उरयान से मुश्तक़ है जिस का मतलब है बरहना और बग़ैर लेबास के होना। जिस मल्ऊन ने इमामे मज़्लूम का लेबास छीना था उस का नाम इस्हाक़ बिन हवीयतुल हज़रमी था। मक़तल में मिलता है जैसे ही मल्ऊन ने इमाम की क़मीस को अपने नजिस बदन पर पहना, बर्स का शिकार हो गया।

(बेहारुल अनवार, जिल्द ४५,स॰५७)

अस्सलामो अलल जोसूमिश्शाहेबाते

सलाम हो उन जिस्मों पर धूप की शिद्दत से जिन के रंग बदल गए।

जोसूम जिस्म की जम्अ है और शाहिबात जुसूम की सिफ़त है। शाहिब उसे कहते हैं जिस का जिस्म लाग़र हो गया हो और उसका रंग उड़ गया हो, मेहनत की वजह से या भूक की वजह से या सफ़र की बेना पर।

नम्र बिन तौलब का शेअ्र है:

व फ़ी जिस्मे राअीहा शहूता कअन्नहू

होज़ालुन व मा मिन क़िल्लतित्तोअ्मे युहज़लो

जब कि लबीद कहता है:

रअत्नी क़द शहबतो व सल्ला जिस्मी

तेलाबुन्नाज़ेहाते मिनल होमूमे

मज़्लूमे करबला और उनके अस्हाबे बा वफ़ा के जिस्मों का रंग बदल गया था और वोह लाग़र हो गए थे, भूक, प्यास, तलवार का भारी पन, सफ़र की शिद्दतें वग़ैरह से। लेकिन उन में से किसी एक सबब ने भी ह़क़्क़े जेहाद अदा करने में रुकावट बनने की हिम्मत न की।

अस्सलामो अ़लद्देमाइस्साएलाते

सलाम हो ख़ून के बहते दरियाओं पर।

देमाअ् यअ्नी ख़ून और साएलात सयल से मुश्तक़ है जिस से मुराद है बहना। जिस्मे इंसानी में जब तक ख़ून बहता रहता है जिस्म में ह़रारत पाई जाती है और जब जिस्म से रूह़ क़ब्ज़ हो जाती है ख़ून सर्द हो जाता है और इंसान को मुर्दा कहते हैं।

करबला वालों ने अपना ख़ून बहा कर इंसानियत में एक ऐसी रूह़ फूंक दी जो रोज़े क़यामत तक उसे मुर्दा होने नहीं देगी और जसदे इंसानियत को ह़याते जावेदानी बख़्शेगी। करबला वालों के ख़ून की बदौलत इंसानियत के वजूद में ह़रारत पाई जाती है और रहेगी। हुसैन का येह सब से बड़ा एहसान है इंसानियत पर।

अस्सलामो अ़लल अअ्ज़ाइल मुक़त्तअ़ाते

सलाम हो अअ्ज़ा-ओ-जवारेह़ के बिखरे हुए टुकड़ों पर।

अअ्ज़ा अ़ज़ू की जम्अ़ है और मुक़त्तअ़ात यअ्नी टुकड़े। मज्लिसे हुसैन अ़लैहिस्सलाम में शरीक होने वाले अ़ज़ादार बख़ूबी वाक़िफ़ हैं कि किस त़रह़ मज़्लूमे करबला सुब्हे आशूर से ले कर अ़स्रे आशूर तक अस्हाब और अक़रेबा के लाशों को उठा कर ख़याम तक लाते हैं। बसा औक़ात ऐसा होता है कि लाशों को घोड़ों से पामाल किया जाता है। लेहाज़ा हुसैन अ़लैहिस्सलाम पामाल किये हुए टुकड़ों को चुन कर बटोर कर ख़ैमा में लाते थे।

अस्सलामो अ़लर्रोऊसिल मुशालाते

सलाम हो उन सरों पर जिन्हें नेज़ों पर बुलंद किया गया।

शयल का मुफ़रद है रास यअ्नी सर और मशालात शेल से मुश्तक़ किया गया है जिस के मअ्नी हैं बुलंद करना और येह इस्मे मफ़ऊल, जम्अ़ मोअन्नस सालिम है। सय्यद इब्ने ताऊस (रह़.) फ़रमाते हैं:

सुम्मा अमरब्नो ज़ियादिन बेरासिल हुसैने

अ़लैहिस्सलाम **फ़तीफ़ा बेही फ़ी सेकक़िल कूफ़ते**

इब्ने ज़ेयाद लअ़ीन ने येह हुक्म दिया कि हुसैन अ़लैहिस्सलाम के सर को कूफ़ा के बाज़ारों में फिराया जाए। और फिर सय्यद किसी मरसिया गो के मरसिये के चंद अबयात पेश करते हैं:

रअ्सो इब्ने बिन्ते मोहम्मदिन व वसीय्येही

लिन्नाज़ेरीना अ़ला क़नातिन युर्फ़ओ

वलमुस्लेमूना बे मन्ज़रिन व बेमस्मइन

ला मुन्केरुन मिन्हुम वला मुतफ़ज्जओ

मोहम्मद की बेटी और उनके वसी के फ़र्ज़ंद का सर तमाशाइयों के लिए नेज़ों पर बुलंद किया गया और मुसलमान उसका तमाशा भी देख रहे थे और सुन रहे थे न किसी को उनमें से इनकार था और न ही अफ़सोस।

अस्सलामो अलन्निस्वतिल बारेज़ाते

सलाम हो उन मुख़द्देरात इस्मत पर जिन्हें बे रिदा (ख़ैमोंसे) निकलना पड़ा।

हमीद बिन मुस्लिम कहता है: (अस्रे आशूरा) जब ख़ैमों में आग लगा दी गई और शोअ्ले उठ रहे थे, अहले हरम ख़ैमों के बाहर निकल आए जब कि उनका सब कुछ लूटा जा चुका था, बरहना पा गिरया करती हुईं.....'' जब अहले हरम की नज़रें नअ्श-ए-शोहदा पर पड़ीं वोह चीख़ मार कर रोने लगे और अपने मुँह को पीटना शुरूअ् किया। हमीद कहता है ''पस ख़ुदा की क़सम मैं ज़ैनब बिन्ते अली अलैहिस्सलाम को कभी फ़रामोश नहीं कर सकता जब कि वोह हुसैन अलैहिस्सलाम पर गिरया कर रही थीं और बड़ी ही दर्दनाक आवाज़ में बैन कर रही थीं: नाना जान!आप पर आसमान के फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं,येह आप का हुसैन है जो ख़ून में डूबा,अअ्ज़ा के टुकड़े टुकड़े कर दिये गए हैं और आप की बेटियों को क़ैदी बनाया गया है।(और बअ्ज़ रवायात में आया है:येह आप का हुसैन है कि जिस का सर तन से जुदा कर दिया गया है और अमामा और रिदा छीन ली गई है)। (बेहारुल अनवार, जि॰ ४५, स॰ ५८-५९)

अस्सलामो अला हुज्जते रब्बिल आलमीना,अस्सलामो अलैका व अला आबाएकत्ता हेरीना, अस्सलामो अलैका व अला अब्नाएकल मुस्तश्हदीना,अस्सलामो अलैका व अला ज़ुर्रीयतेकन्नासेरीना, अस्सलामो अलैका व अलल मलाएकतिल मुज़ाजेईना।

सलाम हो तमाम आलमीन के परवरदिगार की हुज्जत पर। सलाम हो आप पर और आप के पाक-ओ-पाकीज़ा आबा-ओ-अजदाद पर। सलाम हो आप पर और आप के शहीद फ़रज़ंदों पर। सलाम हो आप पर और आप की नुसरत करने वाली ज़ुर्रियत पर। सलाम हो आप पर और आपकी क़ब्र के मुजाविर फ़रिश्तों पर।

ज़ेयारत के मुन्दर्जा बाला फ़िक़रों में जिन पर दुरूद-ओ-सलाम भेजा गया है वोह इस तरह हैं: (१) परवरदिगार की हुज्जत (२) इमामे मज़्लूम अलैहिस्सलाम के मअ्सूम माँ बाप पर (३) इमाम के शहीद फ़रज़ंदों पर (४) इमाम की नुसरत करने वाली ज़ुर्रियत पर (५) आप की क़ब्र के मुजाविर फ़रिश्तों पर।

(बक़िया आइंदा, इंशाअल्लाह)

इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के क़याम के असबाब-ओ-एलल मआ़ इस्तेफ़ताआते मराजेअ़् केराम

करबला की खूँचकाँ दास्तान और शहादते सय्यदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैनअ़लैहिस्सलाम की पेशीन गोइयाँ हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से ले कर हज़रत ख़ातम मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम तमाम अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम ने मख़्सूस अंदाज़ में बयान की हैं। रवायाते अइम्मए होदा अ़लैहिमुस्सलाम में बअ़्ज़ अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम की इजमाली और बअ़्ज़ अंबियाअ़लैहिमुस्सलाम की तफ़्सीली दास्तानें वाक़ए करबला के रूनुमा होने के सिलिसले में बयान हुई हैं। इस मज़्मून में हमारा मक़्सद-ओ-मन्शा उन वाक़ेआ़त की तफ़्सील नहीं है अलबत्ता सि़र्फ़ येह ज़ेह्न नशीन करना है कि वाक़अए करबला और शहादते इमाम हुसैनअ़लैहिस्सलाम की बुनियादें बहुत मज़बूत हैं और उसकी मज़हबी और शरई हैसियत मोहकम-ओ-मुस्तनद है। अलमुन्तज़र के मोहर्रम के मुख़्तलिफ़ ख़ुसूसी शुमारों में कुछ हद तक इन रवायात-ओ-वाक़ेआ़त पर रोशनी डाली जा चुकी है। लेहाज़ा क़ारेईन गुज़श्ता शुमारों को ज़रूर रुजूअ़् करें।

एक और बात कहते चलें कि जहाँ अंबिया और अइम्मा अ़लैहिमुस्सलाम की रवायतें वाक़ेए करबला की पेशीनगोइयाँ और फिर शहादत के बाद अइम्मए होदा अ़लैहिमुस्सलाम के ज़रीए मरासिमे अ़ज़ादारी का बरपा करना और लोगों को इन मरासिम को क़ाएम करने की ताकीद करने पर मुतवातिर हदीसें मौजूद हैं, वहीं क़ुरआन मजीद ने भी मरासिमे अ़ज़ा के सिलसिले में एक नहीं बल्कि मुतअ़द्दिद शवाहिद फ़राहम किये हैं लेहाज़ा क़ुरआने मजीद की मुतअ़द्दिद आयतों की रू से भी अ़ज़ादारी की शरई हैसियत साबित है। उसके लिए भी हम अल मुन्तज़र के ख़ुसूसी शुमारों से रुजूअ़् करने की दरख़ास्त करते हैं।

जब क़ुरआन-ओ-हदीस और सुन्नत के ज़रीए मरासिमे अ़ज़ादारी और आ़शूरा की अहमियत साबित है तो मज़ीद किसी और शवाहिद की ज़रूरत नहीं है लेकिन अ़वामुन्नास जो शरई क़वानीन और अहकाम की इल्लतों से उ़मूमन ना बलद होते हैं, वोह कभी कभी दानिस्ता या नादानिस्ता या ख़ारजी आलूदगियों की वजह से या नासेबीन के गुमराह कुन एअ़्तेराज़ात से मुतास्सिर हो कर मरासिमे अ़ज़ा पर एअ़्तेराज़ात शुरू कर देते हैं। अ़ज़ादारी और आ़शूरा की अहमियत को हल्का करने की कोशिश करते हैं और बअ़्ज़ मौक़ा तो बहुत सी हक़ीक़तों का इन्कार कर देते हैं।

लेहाज़ा हम ने इस मज़्मून में कोशिश की है कि इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के क़याम के असबाब-ओ-एलल के ज़ैल में हमारे बुज़ुर्ग मराजेअ़् तक़लीद और बिलख़ुसूस अ़स्रे ह़ाज़िर के मशहूर मराजेअ़् के नज़रियात को अ़वामुन्नास के सामने पेश करें।

मराजेअ़् उ़ज़्ज़ाम के नज़रियात को नक़्ल करने से पहले इमाम हुसैनअ़लैहिस्सलाम के क़याम की बअ़्ज़ इल्लतों को और असबाब का तज़केरा ज़रूरी समझते हैं।

तहरीके करबला के असबाब का तारीख़ी नुक्तए नज़र से जाएज़ा

इमामे हुसैनअ़लैहिस्सलाम के क़याम के असबाब पर नज़र डाली जाए तो मअ़्लूम होगा कि आप के क़याम के पीछे बहुत सी दीनी और इज्तेमाई ज़िम्मेदारियाँ थीं और इसी

लिए आप अ़लैहिस्सलाम ने इतनी अ़ज़ीम क़ुर्बानी पेश की। यहाँ हम कुछ ज़िम्मेदारियों और असबाब पर मुख़्तसर रोशनी डालेंगे।

(१) दीनी ज़िम्मेदारी

दीनी वाजिबात और ज़िम्मेदारी ने आप अ़लैहिस्सलाम पर क़याम को वाजिब कर दिया क्योंकि उमवी हुक्मराँ ने अल्लाह के ह़राम को ह़लाल क़रार दिया था और अपने अह्द-ओ-पैमान को तोड़ दिया था और सुन्नते रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की मुख़ालेफ़त की थी।

(२) समाजी ज़िम्मेदारी

इज्तेमाई और समाजी एअ्तेबार से इमाम अ़लैहिस्सलाम एक मरकज़ की ह़ैसियत रखते हैं। लेहाज़ा आप अ़लैहिस्सलाम ने इमामे उम्मत होने की वजह से जब येह देखा कि उमवी हुकूमत के ज़रीए मआ़शरे में ज़ुल्म-ओ-ग़लबा और फ़साद बढ़ा तो आप अ़लैहिस्सलाम ने उमवी हुक्मराँ को रद्द किया और फिर आप अ़लैहिस्सलाम मसऊ़लियते कुबरा की गठरी को ले कर उठ खड़े हुए और अपने पैग़ाम को अमानत दारी और इख़्लास के साथ पहुँचाया और ख़ुद को, अपने अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम को और अपने असहाब को क़ुर्बान कर दिया ताकि अ़दालते इस्लामी और हुक्मे क़ुरआन पलट आए।

(३) इतमामे हुज्जत

अह्ले कूफ़ा की जानिब से मुतवातिर ख़ुतूत-ओ-वुफ़ूद की आमद ने आप अ़लैहिस्सलाम को एअ्लाने जेहाद, और बाग़ियों के साथ जंग-ओ-महारेबा पर मजबूर किया। उनके ख़ुतूत और दअ्वतों का जवाब, इमाम होने की वजह से आप की ज़िम्मेदारी थी लेहाज़ा आप अ़लैहिस्सलाम ने इतमामे हुज्जत के लिए उनकी दअ्वतों और ख़ुतूत का लेहाज़ फ़रमाया और उनको उमवियों के ज़ुल्म से नजात दिलाने के लिए निकल पड़े।

(४) इस्लाम की हेमायत

मिनजुम्ला असबाब में से कि जिस के लिए आप अ़लैहिस्सलाम ने शहादत पेश की, उमवी हुकूमत की तरफ़ से इस्लाम को जो ख़तरा दरपेश था और उन लोगों की कोशिश थी कि उस को मिटा दिया जाए और उसको जड़ से उखाड़ फेंका जाए और जब कि खुद यज़ीद ने अपने कुफ़्र-ओ-इलहाद का एअ्लान करते हुए कहा था।

लएबत बनू हाशिमो बिल्मुल्के
ख़बरुन जाअ व ला वह्युन नज़ला फ़ला

बनी हाशिम ने हुकूमत के लिए खेल रचा। दरअस्ल कोई ख़बर और कोई वह्ी नाज़िल नहीं हुई है।

और यज़ीद ज़मानए जाहेलियत के अ़क़ीदे पर बाक़ी था और कहता कि न तो किताब नाज़िल हुई और न ही जन्नत और न जहन्नम है, तो ह़ज़रत अ़लैहिस्सलाम ने उन लोगों की उस कोशिश को नाकाम करने का इरादा कर लिया।

(५) ख़ेलाफ़त की हेफ़ाज़त

वाज़ेह तरीन असबाब में से एक सबब येह भी था जिस के लिए इमाम अ़लैहिस्सलाम ने क़याम किया ताकि ख़ेलाफ़ते इस्लामिया को उमवियों की नजासतों से पाक कर दें कि जिस पर उन्होंने ज़बरदस्ती क़ब्ज़ा कर लिया था और इस्लाम की सरासर मुख़ालेफ़त-ओ-तौहीन कर रहे थे लेहाज़ा इमाम अ़लैहिस्सलाम लोगों के दरमियान में अद्ले इज्तेमाई क़ाएम करना चाहते थे और फ़साद को ख़त्म करना चाहते थे।

(६) उम्मत के इरादा और एख़्तियार में आज़ादी

मुसलमान अ़हदे मुआविया और यज़ीद में अपने इरादे और एख़्तियार के इस्तेअ़माल में आज़ाद न थे। सख्तियाँ और क़ैद-ओ-बंद का दौर था। किसी तरह की आज़ादी न थी।

इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने इसी लिए जेहाद-ओ-फ़ेदाकारी के लिए तलवार उठाई ताकि मुसलमानों को इज़्ज़त-ओ-तकरीम से हमकिनार करें और बिलआख़िर आप अ़लैहिस्सलाम की शहादत ने मुसलमानों की तारीख़ और ज़िंदगी को पूरी तरह बदल दिया।

(७) इज्तेमाई मज़ालिम

पूरे ममलकते इस्लामिया में मज़ालिम फैल चुके थे और समाज में उनके मज़ालिम से किसी को छुटकारा मुमकिन न था लेहाज़ा इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने तलवार उठाई और मुसमलानों के लिए इज़्ज़त और करामत के दरवाज़े खोल दिये।

(८) शीअ़याने अ़ली अ़लैहिस्सलाम पर मज़ालिम

उमवी हुकूमत अ़ली अ़लैहिस्सलाम के शीओं के ख़ेलाफ़ तहरीक चला रही थी। शीओं पर मुसलसल मज़ालिम हो रहे थे लेहाज़ा इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने उनकी हेमायत और उन्हें ज़ुल्म-ओ-जौर से नजात दिलाने के लिए क़याम फ़रमाया।

(९) ज़िक्रे अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम को महव करना

एक बहुत वाज़ेह और रोशन बात येह थी कि उमवी हुकूमत इस कोशिश में लगी थी कि ज़िक्रे अह्लेबैत को महव कर दिया जाए और उन अ़लैहिमुस्सलाम के मनाक़िब और असरात को मिटा दिया जाए और अमीरे शाम ने इस काम के लिए इस ख़बीस तरीन वसीले का इस्तेअ़माल किया। आप अ़लैहिस्सलाम ने देखा कि मिंबरों से उन अ़लैहिस्सलाम के वालिद अ़लैहिस्सलाम पर सब्ब-ओ-शितम किया जा रहा है लेहाज़ा आप उसको जड़ से उखाड़ देना चाहते थे।

(१०) अक़दार-ओ-नज़्मे इस्लामी को तबाह -ओ-बर्बाद करना

उमवी हुकूमत इस बात पर तुली हुई थी कि नज़्मे इस्लामी और अक़दारे इस्लामी को तबाह-ओ-बर्बाद कर दें लेहाज़ा आप अ़लैहिस्सलाम ने इस्लामी अक़दार -ओ-नज़्म में रूह फूंकने के लिए क़याम फ़रमाया।

(११) अम्र बिल मअ़रूफ़

सब से मज़बूत और मोअक्कद असबाब में येह सबब है। आप अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुद ही अपनी वसीयत में फ़रमाया कि मैं अम्र बिल मअ़रूफ और नही अ़निल मुनकर के लिये क़याम कर रहा हूँ जो कि इस दीन की बुनियाद है और हर इंसान के लिए येह पहले दरजे पर है।

(१२) बिदअ़त को ख़त्म करना

आप अ़लैहिस्सलाम ने अह्ले बसरा को ख़त में उमवी हुकूमत के सिलसिले में लिखा कि ''यक़ीनन सुन्नत को ख़त्म किया जा रहा है और बिदअ़त ईजाद हो रही है।'' लेहाज़ा आप ने उमवियों की बिदअ़तों को जिन का दारोमदार जाहेलियत से था, उनको ख़त्म करने के लिए और अपने जद्द की सुन्नत को ज़िंदा करने के लिए और परचमे इस्लाम को बलंद करने के लिए अपने ख़ून की क़ुर्बानी पेश की।

(१३) इ़ज़्ज़त-ओ-करामत

उमवियों ने चाहा था कि इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम और अह्लेबैत अ़लैहिस्सलाम को ज़लील करें लेकिन इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने उनकी उस कोशिश को नाकाम कर दिया और रोज़े आ़शूर आप अ़लैहिस्सलाम ने अपने दूसरे ख़ुत्बे में यूँ फ़रमाया:

अला इन्नद् दइ़यब्नद् दईया क़द रकज़ा....

''आगाह हो जाओ कि येह दइ़य इब्ने दइ़य''(१)

(इब्ने ज़ेयाद) यअ़्नी ये पस्त तरीन, पस्त तरीन के बेटे ने मुझे दोराहे यअ़्नी शमशीर व ज़िल्लत के दरमियान क़रार दे दिया है और अफ़सोस कि हम ज़िल्लत के ज़ेरे बार जा रहे हैं, क्योंकि ख़ुदा और उसके पैग़ंबर और मोमेनीन इस बात से कि हम ज़िल्लत को क़ुबूल करें, मनअ़् किया है और पाकदामन और ग़ैरत दार माएं और साहबे शराफ़त बाप के नुफ़ूस जाएज़ नहीं समझते कि अफ़रादे पस्त-ओ-लईम की इताअ़त को शहादत और अपनी नेक तबीअ़त पर मुक़द्दम करें। आगाह हो जाओ कि मददगारों की क़िल्लत और लोगों के मदद के लिए पीठ दिखाने के बावजूद, मैं अपने इस छोटे से गरोह के हमराह जेहाद के लिए आमादा हूँ।

इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने अपनी शराफ़त-ओ-इ़ज़्ज़त-ओ-करामत का एअ़्लान भी किया और मुत्तहिम नसब इब्ने ज़ेयाद की असलियत को सब के सामने उजागर कर

(दइ़य: वोह शख़्स जो अपने नसब में मुत्तहिम हो। पस्त तरीन शख़्स)

दिया। वोह इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम को ज़लील करना चाहता था लेकिन क़यामत तक के लिए ख़ुद ज़लील हो गया।

(१४) उमवियों की ख़यानत

इमामे हुसैन अ़लैहिस्सलाम जानते थे कि उमवी किसी तरह से ख़यानत और झगड़ों से बअ़्ज़ न आएँगे लेहाज़ा आप ने अपने भाई मोहम्मद बिन हनफ़िया से फ़रमाया: अगर मैं बिलों में दाख़िल हो जाऊँ तो (वोह क़ातेलीन) मुझे उन बिलों में से भी निकाल लेंगे और मुझे क़त्ल कर देंगे।

इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने इस बात की वज़ाहत फ़रमा दी कि येह लोग अपने वअ़्दों पर पूरा नहीं उतर सकते। अमीरे शाम ने अमीरुल मोमेनीन अ़लैहिस्सलाम और इमाम हसन अ़लैहिस्सलाम के साथ वअ़्दा ख़िलाफ़ी किया और ख़यानत की और बिल्कुल उसी रविश पर यज़ीद भी अ़मल करेगा।

येह बअ़्ज़ असबाब हम ने तहरीर किये हैं जिसे मोअर्रेख़ीन ने नक़्ल किया है। इसके अ़लावा भी बहुत से अ़वामिल-ओ-असबाब तहरीर किये गए हैं। इस मज़्मून में उसकी गुंजाइश नहीं है। एक चीज़ यहाँ और भी नक़्ल कर देना ज़रूरी समझते हैं कि इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के क़याम के बारे में येह तमाम असबाब और इ़ल्लतें जो नक़्ल हुई हैं येह एक बहुत ही आ़म राए है और तारीख़ में इस असबाब को पाया जाता है। लेकिन कोई येह ख़याल न करे कि यही सारे असबाब इ़ल्लते ताम्मा हैं क़यामे हुसैनी के लिए।

इम्तेहान

इन ज़ाहिरी असबाब पर दिक़्क़त करने से येह मअ़्लूम होता है कि बनी उमय्या ने इस्लाम को मिटाना चाहा और मज़ालिम का अंबार लगा दिया। लेहाज़ा इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने इस्लाम की हेफ़ाज़त और ज़ुल्म को कुचलने के लिए क़याम फ़रमाया। इस में कोई शक भी नहीं है

लेकिन रवायतों में ग़ौर किया जाए तो मअ्लूम होता है कि इमाम अ़लैहिस्सलाम के इस जेहाद से ख़ल्क़ गुमराह का इम्तेहान लिया गया और शीअ़याने अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम के लिए आप अ़लैहिस्सलाम के क़ुब्बए मुक़द्दस को जाए पनाह क़रार दिया गया। अ़ल्लामा मजलिसी (रह.) ने शेख़ मुफ़ीद (रह.) के हवाले से इमाम जअ़्फ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम से एक तूलानी हदीस में नक़्ल किया है कि जब हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने मदीनए मुनव्वरा से कूच फ़रमाया, अफ़वाजे मलाएका सामाने हर्ब से आरास्ता और मुसल्लह ब शमशीर-ओ-नेज़ा नाक़ाहाए बेहिश्त पर सवार आसमान से नाज़िल हुए और ख़िदमते इमाम अ़लैहिस्सलाम में हाज़िर हुए और सलाम किया और कहा ऐ हुसैन अ़लैहिस्सलाम आप अपने जद्दे बुज़ुर्गवार और पेदरे नामदार और बरादरे आ़ली मक़ाम के बअ्द हुज्जते ख़ुदा हैं। हक़्क़ तआ़ला ने अकसर जेहादों में हमें आप अ़लैहिस्सलाम के जद्दे बुज़ुर्गवार की नुसरत-ओ-इमदाद के लिए भेजा अब ख़ुदा अज़्ज़ व जल्ल ने हमें आपकी नुसरत-ओ-इमदाद के लिए भेजा है। हज़रत अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया: मेरा वअ्दागाह और मशहद -ओ-मदफ़न ज़मीने करबला है। जब वहाँ पहुंचूँ तो मेरे पास आना। मलाएका ने कहा: ऐ हुज्जते ख़ुदा! जो हमें हुक्म हो बजा लाएँ।

इस तूलानी रवायत के अगले हिस्से में इमाम सादिक़ अ़लैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया:

अगर मैं अपने घर में तवक़्क़ुफ़ करूँ और जेहाद को न जाऊं तो इस ख़ल्क़े गुमराह का किस चीज़ से इम्तेहान लिया जाएगा और कौन शख़्स मेरी क़ब्र में ज़मीने करबला पर मदफ़ून होगा? जिस ज़मीन को ख़ुदा ने इब्तेदाए आफ़रीनश से बरगुज़ीदा किया है और जाए पनाह मेरे शीओं के लिए बनाया है और तमाम अम्ने दुनिया -ओ-आख़ेरत उनके लिए क़रार दिया है।

(बेहारुल अनवार, जिल्द ४४, स. ३३०)

ख़ुलास़े के तौर पर एक जुम्ला फिर नक़्ल करते हैं कि उमवी हुकूमत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के क़याम की इल्लते ताम्मा और सबबे आख़िर नहीं है क्योंकि अस्ल मक़सद और सबब उससे कहीं अअ़्ज़म -ओ-अकबर -ओ-अहम है। ख़ुदावंद आ़लम ने अपने वलीए अअ़्ज़म हज़रत इमाम हुसैन अश्शहीद अ़लैहिस्सलाम को उनकी क़ुर्बानी के ज़रीए इस्लाम को सर बुलंद करने का इरादा किया और उन हज़रतअ़लैहिस्सलाम को क़यामत तक के लिए आने वाले शीओं की राहनुमाई और हेदायत का रहनुमा क़रार दिया। उन अ़लैहिस्सलाम की अ़ज़ादारी को ईमान की हेफ़ाज़त का ज़रीआ बनाया। लेहज़ा शीआ जय्यद आ़लिम अहमद बिन फ़हद हिल्ली ने अपनी किताब ''इद्दतुद्दाई''(फ़ारसी तरजुमा, स. १०४) में लिखा है रवायत में आया है कि हज़रत हक़्क़े सुब्हानहू ने इमाम हुसैनअ़लैहिस्सलाम की शहादत के एवज़ उन्हें चार ख़सलतें अ़ता की हैं:

१. उन हज़रत अ़लैहिस्सलाम की तुर्बते मुबारक में शफ़ा क़रार दिया।

२. उन हज़रत अ़लैहिस्सलाम के क़ुब्बे के नीचे दुआओं को क़ुबूल क़रार दिया।

३. उन हज़रत अ़लैहिस्सलाम की ज़ुर्रियत में अइम्मए मअ़्सूमीनअ़लैहिमुस्सलाम को क़रार दिया।

४. उन हज़रतअलैहिस्सलाम के ज़ाएरीन के अय्याम को उन की उ़म्रों में शुमार नहीं करता। (यअ़्नी उनकी जो उ़म्र मुअ़य्यन-ओ-मुक़र्रर है ज़ेयारत के अय्याम को उस में दाख़िल नहीं करता बल्कि उस उ़म्र पर इसका इज़ाफ़ा कर देता है)

मराजेअ़् केराम के नज़रियात

इमाम हुसैनअलैहिस्सलाम के क़याम के असबाब पर नज़र डालने के बअ़्द मुलाहेज़ा फ़रमाएं कि हमारे मराजेअ़् केराम ने भी उन ज़ाहिरी इल्लतों को आ़म इल्लत के तौर पर बयान किया है और साथ ही इन्केलाबे हुसैनी और आ़शूरा-ओ-अ़ज़ादारी को रूह-ओ-जाने तशय्योअ़् और शआ़एरुल्लाह क़रार दिया है और इमाम हुसैनअलैहिस्सलाम की मोहब्बत को ज़ामिने नजात क़रार दिया है। हम यहाँ मराजेअ़् के नज़रियात को नक़्ल कर रहे हैं।

(१) मरहूम आयतुल्लाह अल उ़ज़्मा सय्यद अबुल क़ासिम ख़ूई (रह.) का नज़रिया

''हज़रत इमाम हुसैनअलैहिस्सलाम ने अ़ह्दे मुआविया के ख़त्म होने के बअ़्द देखा कि तमाम लोगों ने येह मुशाहेदा किया कि मुआविया ने जाते जाते क्या क्या बुराइयाँ लोगों की गर्दनों पर मुसल्लत करके चला गया, और जो कुछ उसे दीने ख़ुदा में खिलवाड़ करना था, खेल गया तो इमाम हुसैनअलैहिस्सलाम ने क़याम फ़रमाया इस लिए कि वोह जानते थे येह अम्रे इलाही है और अल्लाह के रसूल की वसीयत में से है।

आप का क़याम अह्ले ज़माना पर और आने वाली नस्लों पर हुज्जत क़रार पाया ताकि लोग येह अ़क़ीदा न बना लें कि जो ह़ाकिम है वही वलीये मुस्लेमीन है और उसकी इताअ़त लोगों पर वाजिब है।

ख़ुलासा येह कि इमाम हुसैनअलैहिस्सलाम ने उन चीज़ों को ज़िंदगी अ़ता की जिन को बनी उमय्या ने ख़त्म कर दिया था। आप का येह फ़ेअ़्ल हुज्जत क़रार पाया, और आप ने लोगों को मुतनब्बेह कर दिया कि जो ख़ेलाफ़त की कुर्सी पर चार ज़ानू होकर बैठ जाए वोह ख़ेलाफ़त का अह्ल नहीं हो जाता, और यक़ीनन ख़ेलाफ़त उसके अह्ल के लिए ही होती है। वल्लाहो अ़अ़्लम।''

(सेरातुन्नजात,३/४२७, मिर्ज़ा जवाद तबरेज़ी)

(२) मरहूम आयतुल्लाह मीरज़ा जवाद (रह.) का नज़रिया

दुश्मनों और कुर्सीए ख़ेलाफत पर बैठने वालों के हाथों इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की शहादत में मसलेहत येह है के आपको दुश्मनान-ओ-ग़ासेबीने ख़ेलाफ़त के तमाम उमूर को तहेस नहेस करना था और आपअलैहिस्सलाम का क़याम लोगों को ग़फ़लत से बेदार करने के लिए और अ़क़ाएदे हक़्क़ा के इज़हार के लिए था कि उन अ़क़ाएद की इत्तेबाअ़् और उनकी हेफ़ाज़त वाजिब है और इस तरह आइंदा नस्लें भी आप के क़याम से फ़ाएदा उठाती रहें।

(सेरातुन् नजात ३/४३३, मीरज़ा जवाद तबरेज़ी)

(३) हज़रत आयतुल्लाहिल् उ़ज़्मा अस सय्यद अ़ली सीस्तानी हिफ़ज़हुल्लाह का नज़रिया

इस वक़्त सारी दुनिया में सब से ज़्यादा मुक़ल्लेदीन हज़रत आयतुल्लाह सीस्तानी के हैं और अलहम्दो लिल्लाह आप इस वक़्त नज़फ़ अशरफ़ में क़याम फ़रमाते हुए दुनिया भर के शीओं की रहनुमाई फ़रमा रहे हैं। आप से सवाल किया गया कि: इमाम हुसैनअलैहिस्सलाम के क़याम-ओ-ख़ुरूज का हक़ीक़ी सबब क्या है। हम लोग आपअलैहिस्सलाम की इमामत-ओ-इस्मत पर ईमान रखने के

बअ्द इस तरह के सवालात से बे नेयाज़ हैं लेकिन मुख़ालेफ़ीन इस सिलसिले में मुश्किलात खड़ी कर देते हैं लेहाज़ा हम मजबूरन इस सवाल के जवाब के ख़ाहां हैं। आप की राए इस बारे में क्या है।

आप ने जवाब में फ़रमाया: यक़ीनन ख़ुद आप सलामुल्लाह अ़लैह ने फ़रमाया कि यक़ीनन मैंने ख़ुरूज किया है अपने जद्द की उम्मत की इस्लाह के लिए। और इसी तरह आप अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं ने क़याम किया अम्र बिल मअ्रूफ यअ्नी अच्छाइयों की तरफ़ दअ्वत देने के लिए और नही अ़निल मुन्कर यअ्नी बुराइयों से रोकने के लिए। मज़ीद आप फ़रमाते हैं कि इस बात में शक नहीं कि फ़िस्क़ -ओ-फ़ुजूर का खुल्लम एअ्लान और वोह भी ख़लीफ़ए रसूल के उ़न्वान से, इस्लाम और मुसलमानों के लिए अ़ज़ीम ख़तरा हो चुका था। पस इमाम हुसैनअ़लैहिस्सलाम उसके ख़ेलाफ़ क़याम के लिए मजबूर हो गए। किसी भी ग़यूर मुस्लिम की तरह कि वोह सरकश और तागूत के ख़ेलाफ़ क़याम करता है और अगर उसे येह मअ्लूम हो कि वोह तागूत उसके क़त्ल के दर पै हो जाए तो फिर वोह अंबिया और मुरसलीन की सुन्नत को अपनाता है कि जिन्होंने ज़ुल्म-ओ-तुग़यान -ओ-कुफ़्र और मुन्केरीने हक़ के ख़ेलाफ क़याम फ़रमाया: यहाँ तक कि शहीद हो गए। सलामुल्लाह अ़लैहिम अजमईन।

(इस्तेफ़ताआत: ४८७, अस सय्यद सीस्तानी)

(४) हज़रत आयतुल्लाह ख़ुमैनी (रह.)

इस्लाम को कि अब तक आप देख रहे हैं, सय्यदुश शोहदाअ़लैहिस्सलाम ने महफ़ूज़ रखा है। ख़ुदा की राह में और इस्लाम की तक़वीयत के लिए, ज़ुल्म के ख़ेलाफ़ आपअ़लैहिस्सलाम ने क़याम फ़रमाया। हमारी मिल्लत इन मज्लिसों की क़द्र को जानें। अय्यामे आ़शूरा की येह मजलिसें ऐसी मजलिसें हैं जो हमारी मिल्लत की हेफाज़त करती हैं। अय्यामे आ़शूरा के अ़लावा हफ़्ते के दिनों में येह हमारे लिए जुन्बिश -ओ-हरकत पैदा करती हैं। लोग येह न समझें कि हम एक मिल्लते गिरिया (रोने वाली मिल्लत) हैं। हम एक ऐसी मिल्लत हैं कि इसी गिरिया के ज़रीए हम ने दो हज़ार पाँच सौ साला क़ुदरत को ख़त्म कर दिया। (सहीफए नूर, १६/२०७-२१०)

(५) हज़रत आयतुल्लाह नासिर मकारिम शीराज़ी (दामा ज़िल्लहुल आ़ली)

यक़ीन के साथ कहते हैं कि शआ़एरे बा अ़ज़मते हुसैनी, अफ़ज़ल शआ़एरे इस्लामी है जो कि अइम्माअ़लैहिस्सलाम के ज़रीए हम तक पहुँचा है और शायद अभी जल्दी है कि हम आ़शूरए हुसैनी को दर्क करें और उसकी गहराई तक पहुंच सकें।

अस्सलामो अ़लैक या अबा अ़ब्दिल्लाह व रहमतुल्लाहे व बरकातोहू।

नया मिम्बर बनने के लिए SMS करें, टाइप करें: NA <Name><Add><Lang>
अगर मिम्बर हैं और नहीं मिलता है, टाइप करें:NR <Ref.No> <Name>
भेज दें (Send to) 99877777 57
हमारा पता है:एसोसीएशन आफ़ इमाम महदी (अ.स) पोस्ट बाक्स नं. १९८२२, मुमबई-५०

हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम और बयाने हक़्क़ानियत

इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम का वोह गरांक़द्र ख़ुत्बा ५९ हिजरी और ६० हिजरी के दरमियान जो हज के मौक़े पर इर्शाद फ़रमाया था उसके पुरनूर जुम्ले सारे आ़लम की इन्क़ेलाबी, इक़्तेसादी, मआ़शरती हालात को इस तरह ज़ाहिर कर रहे हैं जैसे आज इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की आवाज़ हर तरफ़ गूँज रही है। सरकारे रेसालत के इस एअ़्लान से कौन इन्कार कर सकता है कि क़ुरआन और अइम्मए मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम एक दूसरे से कभी जुदा न होंगे। येह रहरवान सेराते मुस्तक़ीम के वोह पास्बान हैं जो हौज़े कौसर तक रहबरी करते रहेंगे।

बह्रामंदी क़ुरआने करीम का एक अंदाज़ येह है कि वोह अपनी बात दलील-ओ-बुर्हान से साबित करता है क़ुरआन अंधी तक़्लीद और बेजा अ़क़ीदत का मुख़ालिफ़ है।

अह्लेबैत अ़लैहिमुस्सलाम जो हम वज़्न और शरीके क़ुरआन हैं उनका भी अंदाज़ यही है। वोह भी अपनी हक़्क़ानियत को दलील-ओ-बुर्हान से साबित करते हैं और इस क़द्र मुस्तहकम अंदाज़ में बयान करते हैं कि सब को लाजवाब कर देते हैं। अइम्मए मअ़्सूमीन अ़लैहिमुस्सलाम ने मौक़े-ओ-मुनासेबत से अपनी हक़्क़ानयित साबित की है।

हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम मुआविया की मौत से एक साल क़ब्ल हज को तश्रीफ़ ले गए। जनाब अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास और जनाब अ़ब्दुल्लाह बिन जअ़्फ़र इस सफ़र में आप के हमराह थे। उसी वक़्त वहाँ मौजूद तमाम बनी हाशिम के मर्दों, औ़रतों, गुलामों और वहाँ मौजूद शीओं को जमअ़ किया और अंसार में उन लोगों को बुलाया जो हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम को पहचानते थे।

उसके बाद अपने नुमाइन्दों के ज़रीए पैग़ंबरे अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के उन तमाम असहाब को दअ़्वत दी जो हज के मौक़े पर वहाँ मौजूद थे। उसी वक़्त मिना में ७०० से ज़्यादा अफ़राद अपने ख़ौमों में मौजूद थे जिन में २०० असहाब थे और अकसरियत ताबेईन की थी। जब सब लोग जमअ़ हो गए, हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने इस तरह ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया:

अम्मा बअ़्दः तुम लोग इस बात से ख़ूब अच्छी तरह वाक़िफ़ हो और देख रहे हो और गवाह हो येह सरकश हमारे और हमारे क़बीलों के साथ क्या बर्ताव कर रहा है और किस तरह पेश आ रहा है। मैं तुम लोगों से एक बात दरयाफ़्त करना चाहता हूँ अगर मैं सच्चा हूँ तो मेरी तसदीक़ करना वर्ना तरदीद कर देना।

मेरी बातों को ग़ौर से सुनो और तहरीर में लाओ और जब अपने शहरों और क़बीलों में वापस जाओ तो जो लोग तुम्हारे मौरिदे एअ़्तेमाद हों, मोअ़्तबर हों उनको हमारे हक़ की तरफ़ दअ़्वत देना जो तुम जानते हो। मुझे ख़ौफ़ है कहीं येह हक़ीक़त फ़रामोश न कर दी जाए। हक़ नाबूद हो जाए और बातिल का ग़लबा हो जाए। ''लेकिन ख़ुदा अपने नूर को मुकम्मल करेगा अगरचे काफ़िरों को नागवार क्यों न गुज़रे।''

ख़ुदावंद आ़लम को गवाह बना कर उसको हाज़िर-ओ-नाज़िर जान कर तुम से दरयाफ़्त करना चाहता

हूँ। क्या तुम नहीं जानते कि हज़रत अ़ली इब्ने अबी तालिब अ़लैहिस्सलाम रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के भाई हैं जिस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने असहाब को एक दूसरे का भाई बनाया उस वक़्त हज़रत अ़ली इब्ने अबी तालिब अ़लैहिस्सलाम को अपना भाई क़रार दिया और फ़रमाया: ''दुनिया-ओ-आख़ेरत में तुम मेरे भाई और मैं तुम्हारा भाई हूँ।'' सब ने कहा: हाँ ऐसा ही है। ''तुम को ख़ुदा की क़सम दे कर सवाल करता हूँ! क्या तुम जानते हो हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने मस्जिद और अपने घर के लिए जगह ख़रीदी। उसमें मस्जिद तअ़मीर की और दस घर बनाए नौ (९) घर अपने लिए और दसवाँ घर जो वस्त में था वोह मेरे वालिद के लिए बनाया। उसके बाद मेरे वालिद के दरवाज़े के अ़लावा बक़िया तमाम दूसरे दरवाज़े बंद कर दिये। उस वक़्त लोग तरह तरह की बातें करने लगे। उस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया: न मैंने तुम लोगों के दरवाज़े बंद किए हैं और न मैंने उनका दरवाज़ा खोला है लेकिन ख़ुदावंद अ़ालम ने मुझे हुक्म दिया है कि तुम्हारे दरवाज़े बंद कर दूँ और उनका दरवाज़ा खुला रखूँ।''

इसके अ़लावा उनके अ़लावा हर एक को मस्जिद में सोने से मनअ़ किया वोह मस्जिद में बाक़ाएदा सो सकते थे। उनका घर रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के घर में था। उस घर में रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम और उनके यहाँ बच्चों की विलादत हुई।

सब ने कहा: हाँ बिलकुल ऐसा ही है।

''क्या तुम को मअ़लूम है कि उ़मर ने आँख के बराबर घर की दीवार में मस्जिद की तरफ़ सूराख़ करना चाहा तो उसकी इजाज़त नहीं मिली उस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने ख़ुत्बा इर्शाद फ़रमाया यक़ीनन ख़ुदावन्द अ़ालम ने मुझे हुक्म दिया है मैं मस्जिद को पाक-ओ-पाकीज़ा रखूँ। उस मस्जिद में मैं, मेरे भाई और उनके फ़रज़ंदों के अ़लावा कोई और सुकूनत इख़्तेयार नहीं कर सकता है।

सब ने कहा हाँ ऐसा ही है।

''तुम लोगों को ख़ुदा की क़सम दे कर सवाल करता हूँ। हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम को ग़दीर ख़ुम में वली मुअ़य्यन किया था और उनकी विलायत का एअ़्लान किया था और फ़रमाया था हाज़िर लोगों की ज़िम्मेदारी है कि येह पैग़ाम उन लोगों तक पहुंचाएं जो यहाँ मौजूद नहीं हैं।

सब ने कहा - हाँ सच है।

तुम लोगों को ख़ुदा की क़सम दे कर सवाल करता हूँ: क्या तुम जानते हो कि जंगे तबूक के मौक़े पर हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने हज़रत अ़ली अ़लैहिस्सलाम से फ़रमाया था तुम को मुझ से वही मंज़ेलत हासिल है जो हारून को मूसा से थी और तुम मेरे बाद हर मोमिन के वली हो। सब ने कहा हाँ ऐसा ही है। तुम लोगों को ख़ुदा की क़सम दे कर सवाल करता हूँ: क्या तुम लोग नहीं जानते जब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने नजरान के ईसाइयों को मुबाहेला की दअ़वत दी उस वक़्त वोह सिर्फ़ उनको, उनकी ज़ौजा और

उनके फ़र्ज़ंदों को ले कर गए? सब ने कहा जी हाँ ऐसा ही है। तुम लोगों को ख़ुदा की क़सम दे कर सवाल करता हूँ: क्या तुम को मअ़्लूम है कि ख़ैबर में उन्हीं को अ़लम अ़ता किया और येह फ़रमाया: ''मैं येह अ़लम उस मर्द को दूँगा जिस को ख़ुदा-ओ-रसूल दोस्त रखते हैं और वोह ख़ुदा और रसूल को दोस्त रखता है वोह बढ़ बढ़ कर हम्ला करेगा, मैदान से फ़रार इख़्तेयार नहीं करेगा। ख़ुदावंद आ़लम उसके हाथों पर फ़त्ह-ओ-कामियाबी अ़ता फ़रमाएगा। सब ने कहा: हां ऐसा ही है।

क्या तुम को मअ़्लूम है हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने उन्हें सूरए बराअत ले कर भेजा और येह फ़रमाया: इस सूरह को या मैं पहुंचाऊं या मेरा कोई आदमी।'' सब ने कहा: ख़ुदा की क़सम ऐसा ही है।

क्या तुम को मअ़्लूम है हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम को जब भी कोई सख़्त मरहला पेश आता था तो उनको आगे बढ़ाते थे और उन पर एअ़्तेमाद करते थे और उनको भी उनके नाम से नहीं पुकारते थे बल्कि फ़रमाते थे मेरे भाई, मेरे भाई को बुलाओ।

सब ने कहा: ख़ुदा की क़सम ऐसा ही है।

क्या तुम को मअ़्लूम है कि हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने उनके दरमियान और जनाब जअ़फर-ओ-ज़ैद के दरमियान फ़ैसला किया और फ़रमाया: ''ऐ अ़ली तुम मुझ से हो और मैं तुम से हूँ, तुम मेरे बाद हर मोमिन के वली हो।''

सब ने कहा: ख़ुदा की क़सम ऐसा ही है।

क्या तुम को मअ़्लूम है वोह रोज़ाना दिन और रात में हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से तन्हाई में मुलाक़ात करते थे। जब वोह सवाल करते थे तो अ़ता फ़रमाते थे और अगर ख़ामोश रहते थे तो रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम गुफ़्तुगू का आग़ाज़ फ़रमाते थे।

सब ने कहा ख़ुदा की क़सम ऐसा ही है।

क्या तुम को मअ़्लूम है हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने उन को जनाब हमज़ा और जअ़्फर पर फ़ज़ीलत दी जिस वक़्त जनाब फ़ातेमा अ़लैहस्सलाम से फ़रमाया: मैंने तुम्हारी शादी अपने ख़ानदान के सब से बेहतर शख़्स से की है। जो इस्लाम में सब से पहले हैं, जो हिल्म में सब से अ़ज़ीम हैं और जिन का इ़ल्म सब से ज़्यादा है।

सब ने कहा: ख़ुदा की क़सम ऐसा ही है।

क्या तुम को मअ़्लूम है हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने फ़रमाया:''मैं फ़रज़ंदाने बनी आदम का सरदार हूँ और मेरे भाई अ़ली अ़रब के सरदार हैं, फ़ातेमा जन्नत की औ़रतों की सरदार हैं मेरे दोनों फ़रज़ंद हसन और हुसैन जवानाने अह्ले जन्नत के सरदार हैं।''

सब ने कहा: ख़ुदा की क़सम ऐसा ही है।

क्या तुम को मअ़्लूम है हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने उनको हुक्म दिया था वही उनको गुस्ल देंगे और जिब्रईल उनकी मदद करेंगे।

सब ने कहा: हाँ ऐसा ही है।

क्या तुम को मअ़्लूम है हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने अपने आख़री ख़ुत्बे में इर्शाद फ़रमाया: मैं तुम्हारे दरमियान दो गरांक़द्र चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ ख़ुदा की किताब और मेरे अह्ले बैत इन दोनों से मुतमस्सिक रहो हरगिज़ गुमराह नहीं होगे। सब ने कहा: हाँ ऐसा ही है।

फिर उन लोगों को ख़ुदा की क़सम दे कर सवाल किया। क्या उन लोगों ने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना।

''जो येह ख़याल करता है कि वोह मुझ से मोहब्बत करता है और अ़ली से बुग़्ज़ रखता है वोह झूठा है येह नहीं हो सकता कि मुझ से मोहब्बत रखे और अ़ली अ़लैहिस्सलाम से बुग़्ज़ रखे। उस वक़्त एक शख़्स ने दरयाफ़्त किया ऐ अल्लाह के रसूल येह किस तरह हो सकता है? फ़रमाया इस लिए वोह मुझ से हैं और मैं उन से हूँ। जो उन से मोहब्बत रखेगा वोह मुझ से मोहब्बत रखेगा और जो मुझ से मोहब्बत रखेगा वोह अल्लाह से मोहब्बत रखेगा और जो उन से बुग़्ज़ रखेगा उसने मुझ से बुग़्ज़ रखा और जिस ने मुझ से बुग़्ज़ रखा तो उसने अल्लाह से बुग़्ज़ रखा। सब ने कहा: हाँ ऐसा ही है हम ने ऐसा ही सुना है। ख़ुदावंद अ़ालम ने जिन बातों से अपने औलिया को वअ़्ज़-ओ-नसीहत की है उससे इबरत हासिल करो। ख़ुदा ने अहबार (यहूदी उ़लमा) की मद्ह करने की मज़म्मत की है। ''उनके उ़लमा और अहबार उनको गुनाहों से क्यों नहीं रोकते।'' ''जनाब दाऊद और जनाब ईसा बिन मरयम की ज़बानी बनी इस्राईल के उन लोगों पर लअ़्नत की गई है इस लिए कि वोह नाफ़रमान थे और सरकश थे येह लोग बुराइयों से रोकते नहीं थे येह लोग किस क़द्र बुरा काम अंजाम दे रहे थे।''

(सूरए माएदा, आयात ७८-७९)

ख़ुदावंद अ़ालम ने इस बेना पर उनकी मज़म्मत की है। येह लोग अपनी आँखों से ज़ालिमों को ज़ुल्म और बुराइयाँ करते हुए देखते थे लेकिन उन को रोकते नहीं थे उन चीज़ों की लालच में जो उनको ज़ालिमों से मिलती थीं और उन ख़बरों क ख़ौफ़ से जिन के छिन जाने का अंदेशा था। जब कि ख़ुदा फ़रमाता है।''लोगों से मत डरो मुझ से डरो।''और येह भी फ़रमाता है:''मोमिन मर्द और मोमिन औ़रतें एक दूसरे के वली हैं एक दूसरे को अच्छाइयों का हुक्म देते हैं और बुराइयों से रोकते हैं।'' ख़ुदावंद अ़ालम ने अम्र बिल मअ़रूफ़ और नही अ़निल मुन्कर का ज़िक्र पहले फ़रमाया: और उसको वाजिब क़रार दिया क्योंकि ख़ुदा येह जानता है अगर येह फ़रीज़ा अदा हो गया और येह वाजिब पूरी तरह से क़ाएम हो गया तो बक़िया तमाम आसान और सख़्त फ़राएज़ बरक़रार हो जाएंगे और येह इस बेना पर कि अम्र बिल मअ़रूफ़ और नही अ़निल मुन्कर इस्लाम की तरफ़ दअ़वत देता है और ज़ुल्म से रोकता है ज़ालिम की मुख़ालेफ़त करता है उ़मूमी दौलत और माले ग़नीमत को सहीह तौर से तक़सीम करता है सदक़ात और टैक्स वसूल करता है और मुनासिब जगहों पर ख़र्च करता है।

ऐ यहाँ जमअ़् होने वालो तुम वोह गरोह हो जो इल्म के लिए मशहूर हो ख़ैर और नेकियों में तुम्हारा तज़केरा है। नसीहत और मौएज़त में तुम्हारा नाम

लिया जाता है। ख़ुदा की बेना पर लोगों के दिलों में तुम्हारा रोअ़ब है। शरीफ़ तुम से डरते हैं कमज़ोर तुम्हारा एहतेराम करते हैं। जिन लोगों पर तुम्हें कोई फ़ज़ीलत हासिल नहीं है वोह तुम को तरजीह देते हैं जब कि उन पर तुम्हारा कोई हक़ नहीं है। जब तलब करने वालों की ज़रूरतें पूरी नहीं होती हैं तुम उनकी सिफ़ारिश करते हो। रास्तों में बादशाहों के रोअ़ब-ओ-जलाल की तरह चलते हो और बड़ों की तरह पेश आते हो।

क्या येह सब इस बेना पर नहीं है कि तुम से हुक़ूक़े इलाही के क़याम की उम्मीदें वाबस्ता हैं जब कि तुम ख़ुद ज़्यादा तर हुक़ूक़े इलाही की अदाएगी में कोताही बरतते हो, तुम लोगों ने इमामों के हक़ को हल्का समझ रखा है, कमज़ोरों का हक़ तुम ने ज़ाएअ़् कर दिया है, लेकिन अपनी दानिस्त में अपना हक़ तलब कर लिया है न तो तुम ने कोई माल ख़र्च किया, और जिस मक़सद की ख़ातिर तुम्हारी तख़्लीक़ हुई थी उसको पूरा किया, और न तुम ने किसी क़ौम-ओ-क़बीले से ख़ुदा की ख़ातिर दुश्मनी मोल ली। उसके बावजूद तुम ख़ुदा की जन्नत के उम्मीदवार हो, अंबियाए इलाही की हम नशीनी के तलबगार हो, अ़ज़ाबे ख़ुदावंदी के अ़ज़ाब से अमान के दअ़्वेदार हो।

ऐ ख़ुदा की तरफ़ मंसूब लोगो मुझे डर है कहीं तुम ख़ुदा के बड़े अ़ज़ाब में गिरफ़्तार न हो जाओ क्योंकि ख़ुदा के फ़ज़्ल-ओ-करम से तुम को बड़ी फ़ज़ीलत और मंज़ेलत नसीब हुई है। जो ख़ुदा की मअ़्रेफ़त रखता है तुम उसका एहतेराम नहीं करते हो और बंदगाने ख़ुदा में ख़ुदा की बेना पर मोहतरम होना चाहते हो। तुम देख रहे हो कि ख़ुदा के अ़ह्द-ओ-पैमान तोड़े जा रहे हैं फिर भी तुम ख़ौफ़ ज़दा नहीं होते हो, और अगर तुम्हारे आबा-ओ-अजदाद का अ़ह्द-ओ-पैमान तोड़ दिया जाए तो बहुत ज़्यादा नाराज़ होते हो,ख़फ़ा होते हो। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के अ़ह्द-ओ-पैमान तोड़े जा रहे हैं, नज़र अंदाज़ किये जा रहे हैं। शहरों में अंधे, गूँगे और ज़मीन गीर लोगों का कोई पूछने वाला नहीं है न तो तुम उन पर रह्म कर रहे हो और न अपने घरों मे उन को जगह दे रहे हो और न अपने किसी अ़मल से उनकी मदद कर रहे हो।

अपनी चिकनी चिकनी बातों, रियाकारी से ज़ालिमों के नज़दीक जगह बना रहे हो जब कि ख़ुदावंद आ़लम ने तुम्हें उन तमाम बातों से मनअ़् किया है और तुम उन से ग़फ़लत बरत रहे हो। लोगों की सब से बड़ी मुसीबत येह है कि तुम लोगों ने उ़लमा की जगह पर कब्ज़ा कर लिया है काश तुम्हें इस बात का एहसास होता।

उसकी वजह येह है उमूर और एहकाम का इजरा और नेफ़ाज़ उन उ़लमा के हाथों में है जो ख़ुदा के हलाल-ओ-हराम पर उसके अमानतदार हैं। येह मंज़ेलत और मंसब तुम से छीन लिया गया है और येह इस बेना पर छीन लिया गया तुम हक़ के मसअले में परागंदा हो अलग अलग टुकड़ों में हो। वाज़ेह दलीलों के बावजूद सुन्नत के सिलसिले में एक दूसरे से मुख़्तलिफ़ हो।

अगर तुम अज़ीयतों पर सब्र करते ख़ुदा की राह में ख़ुदा की ख़ातिर तकलीफ़ें बरदाश्त करते तो उमूरे ख़ुदावंदी तुम्हारी तरफ़ वापस आते, तुम्हारे ज़रीए नाफ़िज़ होते और तुम्हारी तरफ़ पलट कर आते लेकिन तुम लोगों ने अपनी मंज़ेलत-ओ-मक़ाम से ज़ालिमों की मदद की और उमूरे एलाही ज़ालिमों को सौंप दिये, वोह शुब्हात पर अ़मल करते हैं, ख़ाहिशात के रास्ते पर चलते हैं। मौत से तुम्हारे फ़रार ने, जुदा होने वाली ज़िंदगी की मोहब्बत ने, उनको तुम पर मुसल्लत कर दिया है। तुम लोगों ने कमज़ोरों को उनके हवाले कर दिया है कुछ वोह हैं जो क़ैद ख़ानों में अज़ीयतें झेल रहे हैं कुछ वोह हैं जो इस क़द्र कमज़ोर हैं कि दो वक़्त की रोटी के मोहताज हैं। येह (ज़ालिम) मुल्क में अपनी मन मानी कर रहे हैं अपनी ख़ाहिशात से ज़िल्लतों को आबाद कर रहे हैं। शरीर लोगों की पैरवी कर रहे हैं ख़ुदा की मुख़ालेफ़त पर कमर बस्ता हैं। हर शहर में उन का एक ख़तीब है जो मिंबर पर चीख़ रहा है। ज़मीन उन के ज़ुल्म से भरी हुई है। उनके हाथ खुले हुए हैं लोग उनके ग़ुलाम हैं वोह अपना कोई देफ़ाअ़् नहीं कर सकते हैं। कमज़ोर और नादार लोगों पर ज़ालिमों,जाबिरों और साहेबाने इक़्तेदार का शिकंजा शदीद है येह ऐसे फरमांरवा हैं जिन को आग़ाज़-ओ-अंजाम की कोई ख़बर नहीं है।

किस क़द्र तअ़ज्जुब और मैं क्योंकर तअ़ज्जुब न करूँ। ज़मीन ज़ालिमों से भरी हुई है। बे रह्म मोमेनीन के हाकिम बना दिये गए हैं।

ख़ुदा हमारे नेज़ाअ़् में फैसला करेगा और हमारे इख़्तेलाफ़ात पर वही क़ज़ावत करेगा।

ख़ुदाया तू जानता है हम में से किसी को बादशाहत और हुकूमत की ख़ाहिश नहीं है और न इस दुनिया की कोई तलब है। हम तो तेरे दीन के परचम को बुलंद देखना चाहते हैं और तेरे शहरों में इस्लाह करना चाहते हैं। ताकि तेरे मज़्लूम बंदे अम्न-ओ-अमान से रह सकें। तेरे वाजेबात, मुस्तहब्बात और अहकाम पर अ़मल हो सके।

अगर तुम लोगों ने हमारी मदद नहीं की और हमारे साथ इंसाफ़ नहीं किया तो येह ज़ालिम तुम पर और ज़्यादा मुसल्लत हो जाएंगे। तुम्हारे नबी के नूर को ख़ामोश करने की कोशिश करेंगे। और ख़ुदा हमारे लिए काफ़ी है उसी पर भरोसा करते हैं उसकी तरफ़ वापस आना है और उसी की तरफ़ जाना है।

(अल इमाम अल हुसैन अ़लैहिस्सलाम समातह व सीरतह,अस सय्यद मोहम्मद रज़ा अल जलाली, स॰ १०६-२१२)

ममाज़ा मोहफ़्फ़ज़ुल इमाम अल हुसैन अ़लैहिस्सलाम,स॰ २६-३१,अ़ब्द अल साहेब ज़दु रियासतैन)

इस अ़ज़ीमुश्शान ख़ुत्बे को ग़ौर से पढ़ें आईना बना कर अपने ज़माने की तसवीर देखें। कहीं ऐसा न हो कि हम ख़ुद उन्हीं लोगों में हों।

आइये हालात का मुक़ाबला करें और हज़रत वलीये अ़स्र अ़लैहिस्सलाम के ज़हूरे पुर नूर के लिए ज़मीन हमवार करके हज़रत इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की ख़ुशनूदी हासिल करें।

शहरे दमिश्क़ में यज़ीद की शिकस्त

(१) ***फ़क़ामत ज़ैनबो बिन्तो अलीइन व क़ालत अल्हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन व सल्लल्लाहो अला रसूलेही व आलेही अजमईन, सदक़ल्लाहो सुब्हानुहू सुम्मा काना आक़ेबतल्लज़ीना असाओ वस्सूअ अन कज़्ज़बू बेआयातिल्लाहे व कानू बेहा यस्तह्ज़ेऊन.***

पस उठी अली अलैहिस्सलाम की बेटी ज़ैनब अलैहस्सलाम और कहा तमाम तअरीफ़ें मुख़्तस हैं रब्बे दो जहाँ के लिए और उसी की तरफ़ से दुरूद-ओ-सलाम है उसके रसूल और रसूल की तमाम आल पर, सच कहा है उस ज़ाते पाक ने कि **''फिर उन लोगों का अंजाम जिन्होंने बुराई की थी बुरा ही हुआ इस लिए कि उन्होंने अल्लाह तआला की आयतों को झुठलाया। और वो उनकी हंसी उड़ाया करते थे। ''**

(सूरए रोम, आयत १०)

(२) करबला के मैदान में ६१ हि॰ दस मोहर्रमुल हराम को एक जंग हुई थी यज़ीद इब्ने मुआविया और हुसैन इब्ने अली अलैहिस्सलाम के साथ बहत्तर जियालों ने तीस हज़ार का मुक़ाबला किया था। नमाज़े सुब्ह से शुरू हुई और सूरज ढलते ढलते जंग ख़त्म हो गई। हुसैनी ख़ैमे जला दिये गए। लाशें पामाल हो गईं।

(३) यज़ीदी लश्कर में फ़त्ह-ओ-ज़फ़र के नक़्कारे बजे तीस हज़ार के लश्कर में हज़ारों ने मर्गे ख़ौफ़नाक का चेहरा देखा और बाक़ी लश्करियों ने ख़ैमागाहे हुसैनी से लूटा हुआ असबाब हज़ारों में तक़सीम हुआ होगा ले गए जो जिसके हाथ लगा।

(४) यज़ीदी लश्करियों, सरदारों के ख़ैमों में चेराग़ां का एहतेमाम हुआ। उधर चेराग़े सिब्ते पयंबर ख़ामोश हो गया। एक वारिसे क़ुरआन बीमार बारगाहे ख़ुदावंदी में सज्दा रेज़, ३८ बच्चे सह्मे, प्यासे मुक़ीम, ख़ामोश, नीम जान अपनी माओं की गोद में बैठे हुए।

(५) बीबियाँ ख़ाकबसर, चादरें सर पर नहीं, जले हुए ख़ैमे के क़रीब मश्ग़ूले एबादत और साएं साएं करती हुई रात का सन्नाटा। जनाब ज़ैनब और उम्मे कुलसूम उस शिकस्त ख़ूर्दा शाम में पहरेदारी पर मामूर हैं। एक तरफ़ फ़त्ह-ओ-ज़फ़र का शोर और ऐश-ओ-तरब के क़हक़हे दूसरी तरफ़ कर्ब, आह, ख़ामोशी कभी फ़राज़े आसमानी से बातें करती हुई निगाहें कभी ज़मीन पर छाए हुए सुकूत पर जमी हुई नज़रें।

येह आमने सामने का मंज़र न कभी किसी ज़माने में न किसी जगह पर पाया गया है न देखा गया है। न सुना गया है और न कभी सुना जाएगा। देखें इस शिकस्त ने इस क़िल्लत के साथ इतनी बड़ी कसरत के सामने जो रूनुमाई हुई है रफ़्ता रफ़्ता करबला से दमिश्क़ तक पहुंचते पहुंचते सुब्हे आशूर से अस्रे आशूर तक होने वाले हादसे ने कैसे कैसे भरपूर तमांचे यज़ीद के मुँह पर मारे हैं। किस तरह उसके लश्कर ने ज़िल्लत-ओ-रुसवाई का मुँह देखा है। कैसे पायए तख़्ते दमिश्क़ में यज़ीद की इस नाम नेहाद फ़त्ह ने अपने हाथों से ख़ुद अपने मुँह पर तमांचे मारे हैं और इसी शिकस्त नसीब फ़त्ह की रग रग से जो खून क़तरा क़तरा टपकता रहा वही फ़त्ह यज़ीद के लिए दुश्नाम बन कर रह गई। और जिसे शिकस्ते हुसैन कहते हैं उसके कश्फ़-ओ-करामात और उसकी जल्वा नुमाई से अर्श-ओ-कुर्सी ने दुरूद-ओ-सलाम के पयाम ज़मीने करबला को भेजे हैं।

(६) दुनिया की तारीख़ में न क़दीम ज़माने से ले कर आज तक और न सुब्हे क़यामत तक ऐसी शानदार अ़ज़मत मआब, काएनात पर छा जाने वाली तासीर की हामिल, अ़क़्ल-ओ-शऊ़र को झिंझोड़ने वाली, फ़िक्र को पाकीज़गी और तक़द्दुस का दर्स देने वाली, इंसानियत के लिए सबक़ आमोज़ समावात में तहलका मचा देने वाली अह्ले समावात को ग़र्क़े तहय्युर कर देने वाली वोह शिकस्त है जो आईना दिखा रही है आले बू तुराब की इस्लाम पर क़ुर्बानियों का मसाएब में सिलसिलए शुक्र ख़ुदा का, अख़्लाक़ की मज़हर हस्तियों के जज़्बे का, होश-ओ-ख़ेरद की रोशनी में तीर, तलवार और तबर के सामने वेलायत के मअ्नी-ओ-मफ़हूम की ढाल बन कर साबित क़दम रहने का इस आईनए हक़ीक़त में सब कुछ साहेबाने इंसाफ़ को दिखाई दे रहा है तो दूसरी तरफ़ येह भी देखिये कि कूफ़े से पचहत्तर साल का जवान हबीब इब्ने मज़ाहिर अंधेरों को चीरता हुआ, हुर अपने भाई, ग़ुलाम और बेटे के साथ आज़ादी का कलमा पढ़ता हुआ हुसैन के क़दमों में आ गिरा है। सईद के क़ुर्बानगाह की तरफ़ जौलाँ क़दम, जौन ग़ुलाम के सियाह चेहरे पर से एक नूर के सातेअ् होने की तमन्ना को दूल्हा बनते देखना, येह सब उस आईनए हक़ीक़त में दिखाई पड़ रहा है। येह वही शिकस्त है जो करबला में सज कर जल्वा गर हुई तो अपने और ग़ैरों ने सब ने देखा। येह आसमाँ जनाब शिकस्त है।उसी शिकस्त के उ़न्वान के तहेत अंबियाए-मा सबक़ के माथे से टपकते हुए पसीनों से उनके इस्तेअ्जाब की दास्तानें लिखी गईं। और औसिया के सब्र-ओ-इस्तेक़लाल की सबात क़दमी ने क़लम को क़िर्तास पर जुंबिशे तहरीरे हक़ गोई का हौसला दिया।

(७) मुआ़विया की गहरी सियासत और उसकी ज़िंदगी के आख़िर लमहा: पहले येह देखें मोहासेबा करें, नज़र में रख लें कि यज़ीद कौन और कैसी सल्तनत का बादशाह था। फिर देखें दमिश्क़ जो शाम का पायए तख़्त था और यज़ीद इब्ने मुआ़विया बादशाहे वक़्त था उसकी शिकस्त के असबाब कैसे पैदा हुए। ६० हि॰ मुआ़विया इब्ने अबू सुफ़यान की फ़ित्ना अंगेज़ ज़िंदगी का आख़री साल था। चौंका देने वाली बात येह है कि मुआ़विया की बादशाहत में सियासी दावँ पेच पर इस्लाम का लेबल ज़रूर था मगर हिकमते अ़मली राहिबों के दानिशवर सर जॉन के मशवरों के तहेत थी। आज भी वहाबी तब्लीग़ात के मरकज़ की असास उसी फ़िक्र के तहेत है। राहिबों का नेज़ामे हुकूमत गिर्जा घर के पापाओं के हाथ में था। येह क़ौम बड़ी चालाक ख़ून आशाम, दूर रस, ऐसे सोचे समझे मन्सूबों के तहेत इस्लाम दुश्मनी की तरफ़ हर मुमकिन एक़दाम में मसरूफ़े कार रहती थी जिस की मिसाल सारी दुनिया में क़ाएम है। इस्लाम की बढ़ती हुई शोहरत, पेश क़दमी और इंसानियत, शराफ़त, अख़्लाक़ियात और फ़लाह-ओ-बहबूद आ़म्मा के ताने बाने से बनी हुई तहज़ीब जिसका मदार आसमानी सिलसिलों और वेलायते मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम की रहबरी, हेदायत और क़ुरआने मजीद की आयतों की रोशनी में रूए ज़मीन पर फैल रही थी कब भला अह्ले राहिबान उसे हज़म कर सकते थे। मुआ़विया के दौर में उन्हें अपनी तहज़ीब और कलचर और अंदाज़, फ़िक्रे आ़म्मा पर असर डालने का मौक़ा अच्छा मिला और अच्छी तरह फ़राहम हुआ। मैदाने मुबाहेला से ले कर जंगे नहरवान तक के अ़वामिल उनके सामने मुशाहेदा और अ़मल के लिए मौजूद थे। चुनाँचे मालिके अश्तर की शहादत अ़म्र आ़स ने एक राहिब की वेसातत से अंजाम दिया। मुआ़विया ने उमूरे सल्तनत के चढ़ाव उतार और सीधे सादे मुसलमानों पर अपनी हुकूमत की हदों को अ़रब के बड़े ख़ित्ते में वुसअ़त देने के लिए ईसाइयों के

दानिशवरों से बहुत कुछ सीखा था। इसलिए अपनी हयात में देखा था कि कूफ़ा एक ऐसा शह्र है जहाँ अ़ली अ़लैहिस्सलाम ने इस्लाम की उलूही तहज़ीब और मअ़्सूम रहबरों की क़यादत के ..... आसार-ओ-बरकात पैदा कर दिए थे। और वेलायत का सबक़ रहबा के मैदान में एक बड़े मजमअ़् में दोहराया था। इस शहर में मुआ़विया का असर ज़ाएल होता दिखाई दे रहा था। हराम, हलाल की पहचान और शराब नोशी जैसी मनहूस चीज़ों से परहेज़, एबादत, क़ुरआन की तिलावत उसकी तफ़सीर, ज़नाने कूफ़ा में हज़रत ज़ैनब की सीरत और तअ़्लीमाते अह्ले बैत अ़लैहिमुस्सलाम का दर्स आ़म हो रहा था।

शहज़ादी ज़ैनबे कुबरा अ़लैहस्सलाम का वोह ख़ुत्बा जो दरबारे यज़ीद में दिया उसे यहाँ ठहर कर इस लिए दे रहा हूँ कि क़ारेईन अंदाज़ा लगाएं कि शहज़ादी की तक़रीर में फ़साहत-ओ-बलाग़ते इल्मी किस पाये की थी और आप कितनी शुजाअ़् थीं और हालात के मद्दे मुक़ाबिल किस तरह डट कर मुक़ाबला किया है। और आप की तब्लीग़ात कूफ़ा में इल्मी और अख़्लाक़ी दर्स देते वक़्त कैसी मोहय्यरुल उ़क़ूल रही होंगी। इस से आप की सीरत की एक हल्की सी झलक सामने आ जाती है।

(८) ऐ यज़ीद! क्या तूने ज़मीन-ओ-आसमान के रास्ते हमारे लिए इस तरह बंद कर दिये हैं कि कहीं भी हमारे लिए रास्ता नहीं है। और हम जहाँ भी होंगे तेरे क़ैदी नज़र आएं और तू इस ज़ाहिरी ग़लबे को अपने लिए अल्लाह के नज़्दीक इज़्ज़त और हमारे लिए ज़िल्लत तसव्वुर करता है। और तू मुतकब्बिर हो कर अपनी नाक लंबी किये बैठा है और ख़ुश हो रहा है कि येह दुनिया सिर्फ़ तेरे एख़्तेयार में है और तेरे कामों के लिए बनाई गई है। इसी लिए हमारी ममलेकत-ओ-हुकूमत को अपनी ज़ाती और दाएमी जागीर समझने वाले क्या तू अल्लाह तआ़ला का फ़रमान भूल गया है।

वला यह्सबन्नल्लज़ीना कफ़रू अन्नमा नुम्ली लहुम ख़ैरुन लेअन्फ़ोसेहिम इन्नमा नुम्ली लहुम लेयज़्दादू इस्मन व लहुम अ़ज़ाबुम् मुहीन.

(सूरएआले इमरान,१७८)

और न गुमान करें वोह लोग जो काफ़िर हुए कि हम जो उनको ढील देते हैं वोह उनके लिए मा सेवा उसके नहीं है कि हम उन्हें इस लिए ढील देते हैं ताकि येह गुनाह और बढ़ा लें और उनके लिए ज़िल्लत देने वाला अ़ज़ाब है।

फिर हम अपने मक़सद की तरफ़ क़ारेईन को मुतवज्जेह करते हैं यही वजह थी कि जब यज़ीद बरसरे एक़्तेदार आया तो उसको कूफ़ा की फ़िक्र लाहक़ हुई। रवायते मा सबक़ के तहेत उसने सरजॉन जो मुआ़विया के ज़माने से मुशीरकार था, तलब किया। और सूरते हाल से आगाह किया। सर जॉन ने मुआ़विया का तहरीर कर्दा एक वसीयत नामा यज़ीद को दिया। जिस में येह तहरीर था कि जब कूफ़ा में इन्तेशार पैदा हो और लोग हुकूमत के ख़ेलाफ़ चर्चा करने लगें तो इब्ने ज़ेयाद को बसरा के साथ कूफ़ा की भी अमारत-ओ-असारत दे देना। वोह अपने ज़ुल्म-ओ-इस्तेब्दाद और सेयासी हरबों और अ़वामिल के ज़रीए अपने क़ाबू में ले आएगा। येह मुआ़विया का हेदायत नामा यज़ीद के ज़ेरे नज़र रहा। इसी नज़रिये के तहेत उसने उ़बैदुल्लाह को मुत्तलअ़् किया कि अब वोह वक़्त आ गया है कि आले अबू सुफ़यान का भरपूर इन्तेक़ाम आले अबू तुराब से लिया जाए जिसकी फ़र्द फ़रीद हुसैन बिन अ़ली हैं। (तारीख़े मदीना-ओ-दमिश्क़, ..., तारीख़े इब्ने अल वर्दी,

मोअ्जमुल कबीर, सैरे तवारीख़, मुंदर्जा बाला आईना दारी करती हैं कि गो जुम्ले और बयान में अपनी अदाएगी के लेहाज़ से मुख़्तलिफ़ हैं लेकिन सब ने इसी मत्न और मतालिब को ज़ेरे क़लम लाने की कोशिश की है। आलूसी, बलाज़री, तबरानी ने वोह ख़त जो यज़ीद ने इब्ने ज़ेयाद को लिखा है उसे भी नक़्ल किया है। हुसैन अपने क़ाफ़ले के साथ कूफ़ा की तरफ़ हरकत कर रहे हैं। येह तेरी ज़िम्मेदारी का इम्तेहान है अगर हुसैन को क़त्ल कर दिया तो फिर तू और मन्सब दार क़रार पाएगा और मोहतरम होगा वरना तो वही गुमनाम बे वक़अत और वलदुज़्ज़ेना क़रार पाएगा।

राक़ेमुल् हुरूफ़ के नज़दीक येह कहना कि यज़ीद इब्ने मुआविया इब्ने अबू सुफ़यान मअ्मूली फ़रासत या अक़्ल नुमा शह नुकरा का हामिल था। वोह फ़क़त ओबाश और फ़ासिक़-ओ-फ़ाजिर ही नहीं था बल्कि उसके साथ उसने महरमात के साथ बदकारी की उसने हराम-ओ-हलाल की पहचान मिटा दी। येह सब ख़बासत उस पर जहाँ मुन्तहा होती हैं वहीं मुआविया के तर्ज़े हुकूमत उसके अक़ीदे और मक़सद को भी ख़ूब जानता था। वाक़ेअए करबला के हादिस होने के पस मंज़र में ताक़त और इब्लाग़े बातेला की ज़बरदस्त गिरफ़्त का उसे पूरा यक़ीन था। शाम में जुम्आ की नमाज़ अगर बुध को पढ़ा दी जाए तो कोई हंगामा बर्पा न होगा। अली अलैहिस्सलाम की निस्बत मुरसले अअ्ज़म से अगर अज़हाने शामियान से मिटा दी जाए तो कोई तअज्जुब ख़ेज़ बात न थी। करबला के हादेसे के पीछे अरब और अजम तक फैली हुई सल्तनत की ही ताक़त न थी बल्कि यहूदी और ईसाई के दिमाग़ के भी अवामिल पूरी तरह इस्लाम दुश्मनी में शामिल थे। येह इतनी बड़ी मुहिम उस एअ्लान के मुक़ाबिल में थी।

''मा मोहम्मदुन इल्ला रसूल

या

व मा अलैना इल्लल बलागुल मुबीन''

या इत्तेबाए ख़ुदा और रसूल और उलिल अम्र या मवद्दते अह्ले कुर्बा या उसकी इताअत करो जो हालते रुकू में ज़कात दे। तक़रीबन मआनी-ओ-मतालिबे इब्लाग़े बातेला के ज़रीए जब ज़ेहन से मह्व कर दिये गए या आसमानी किताब नेज़ों पर बुलंद करने तक हुर्मत को रख दिया गया था उस वक़्त मुतालेबए सरे हुसैन वजूद में आया और इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने इतनी बड़ी ताक़त का मुक़ाबला करबला में किया था। वरना यज़ीद की क्या मजाल थी कि वोह भरे दरबार में कहने की जुरअत करता, न कोई वही आई न कोई दीन। येह तो बनी हाशिम का रचाया हुआ खेल था। इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने यज़ीद के इसी नशे को उसके भरे दरबार में इस तरह उतारा कि उसके सामने जहन्नम के आग की लपटें और उसके शोअ्लों की लपटें इसी दुनिया में दिखाई देने लगी थीं। (वोह अस्बाब-ओ-एलल जो यज़ीद के पास थे उसका तफ़सीली जाएज़ा वही ले सकता है जो अपने और ग़ैरों की तवारीख़ को बहुत ग़ौर से पढ़े और बैनस्सुतूर में छिपे राज़ों को दर्क करे) आइये देखें दमिश्क़ में कैसे यज़ीद की फ़त्ह उस के लिए शीशा के चकना चूर टुकड़ों का बिस्तर बन गई।

(१) हलचल शह्रे दमिश्क़ में: जैसे ही क़ाफ़लए असीराने करबला शह्रे दमिश्क़ पहुंचा उसे बैरूने शह्र रोक दिया गया। येह हुक्म यज़ीद की तरफ़ से नश्र किया गया कि शह्र में आईना बंदी की जाए, घर और दूकानों को सजाया जाए। अभी कुछ लोग सजावटों और आराइशों में मसरूफ़ ही थे कि क़ाफ़लए असीराने करबला और

सरहाए शहीदाने करबला शह्रे दमिश्क़ में दाख़िल हुआ। क़ाफ़ला के साथ सुहैल सहाबिए रसूल, सलीम कूफ़ी और हमीदा बिन्ते हबीबा भी चल रहे थे। उन लोगों ने वहाँ के उन अफ़राद से इस तरह दरयाफ़्त किया येह मुसीबत ज़दा क़ाफ़ला जिस में बच्चे हैं और औरतें हैं और ज़ंजीर में जकड़ा हुआ एक बीमार जवान है कौन है? लोगों ने जवाब दिया ख़लीफ़ा यज़ीद के ख़ेलाफ़ उन लोगों ने ख़ुरूज किया । जब लोगों को येह मअ्लूम हुआ कि येह नबी ज़ादियाँ हैं जो रसन बस्ता हैं और यतीम बच्चे, आले मोहम्मद अ़लैहिमुस्सलाम और अस्हाबे इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के हैं वोह जवान जिसे ज़ंजीर पहनाई गई है नवासए रसूल, इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम का फ़रज़ंद अ़ली इब्निल हुसैन अ़लैहिमुस्सलाम है तो येह ख़बर एक तरफ़ दूसरी तरफ़ मुरसले अअ्ज़म की सीरत के मुरक़्क़े जो पाए ज़ंजीर और रसन बस्ता थे और तिफ़्लाने यतीम के गर्द से अटे चेहरे थे यअ्नी एक इन्क़ेलाब की लहर दौड़ रही थी। वोह बेख़बर और शिकम परवर शामी जवान जिन की एक बड़ी तअ्दाद है जो करबला में बहत्तर जियाले शहीदों के हाथ वासिले जहन्नम हुए थे उनके घर में चिरागां का सवाल ही पैदा नहीं होता। दूसरी तरफ़ कूफ़ा में बेचैनी, तलातुम, नौहा ख़ानी हर हर घर में बपा थी जिसकी ख़बर शाम पहुँच रही थी। तब्लीग़ाते बातेला अ़वाम में चाहे जितना ढोल पीट ले नज़रियात में तब्दीली की सेयाही उस वक़्त छट जाती है जब तअस्सुरात-ओ-बरकात के ज़बरदस्त अ़वामिल का ग़लबा होता है। तमाम सफ़र में सुब्ह होती थी मायूसियों का लेबास पहने हुए। दोपहर मातम करती हुई, सेह पहर ढलती थी दिल की रगों को तोड़ती हुई और उन कैफ़ियाते शब-ओ-रोज़ में तमाशाइयों का हुजूम जिस में अ़ली अ़लैहिस्सलाम की शेर दिल बेटी की मुनासिब जगह रुक रुक कर मक़सदे शहादते हुसैन और हुसैन अ़लैहिस्सलाम की निसब्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से,आप अ़लैहिस्सलाम की नूरानी ख़िल्क़त और मन्शाए इलाही से वोह मंज़िलों का फ़राहम होना जहाँ हज़रत आबिद अ़लैहिस्सलाम से आयए मवद्दत का नुज़ूल मुरसले अअ्ज़म सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के जिगर गोशों के लिए हुआ था। हेफ़ाज़ते दीन को अख़बस के मक्र-ओ-फ़रेब और बातिल की चालाकियों और ख़ूँरेज़ियों के बावजूद बचा कर निकाल कर लाना येह मशीयते ख़ुदावंदी थी जहाँ सूरए तौबा की आयत नंबर ३२, कि अल्लाह के नूर को फूँकों से नहीं बुझा सकते।

व याबल्लाहो इल्ला अंय्योतिम्मो नूरहू व लौ करेहल काफ़ेरून.

और यही वोह मुक़ामात हैं जहाँ उलिल अब्सार, उलिल अबरार, सालेहीन, मोमेनीन, इबादत गुज़ारान और मअ्रेफ़ते इलाही की तरफ़ मुतवज्जेह इन्साफ़ करने वाले अफ़राद अल्लाह की क़ुदरत, उसका क़ादिरे मुतलक़ होना, उसकी ज़ाते बिस्सेफ़ात के क़ाएल हो जाते हैं मुशाहेदा करते हैं वरना कैसे समझ में आता इज्तेमाए ज़िद्दैन मोहाल और बशरी ताक़तों के लिए ना मुमकिन है। लेकिन मुमकेनुल वजूद के लिए मुमकिन है मोहाल नहीं है। ख़ुदा कहता है हम उन बंदों को ज़मीन का वारिस बनाएंगे जो कमज़ोर कर दिये गए हैं साबिक़ अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम से ले कर ख़त्मुल मुरसलीन तक हर अ़ह्द में हुकूमत और बादशाहत के ताजों को तन्हा अल्लाह के फ़रुस्तादा ने सब्र, इस्तेक़ामत, रास्ती, इर्तेक़ा और इब्लाग़े मुबीन से उन्हीं के सरों पर तोड़ दिया। आतशे नमरूद का गुलज़ार होना, फ़िरऔन की दाढ़ी पकड़ कर एक शीर ख़ार बच्चे का ज़बरदस्त तमांचा मारना और महफ़ूज़ रहना येह सब अंबिया के

मोअ्जिज़ात अगर जमअ् किये जाएं जहाँ ना मुमकिन नज़र आए।

इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम के सर बुरीदा का कुरआन की तिलावत करना

इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम का सर बुरीदा जो नेज़े पर नस्ब था उसका सूरए कहेफ़ की आयत ९ (ऐ रसूल! क्या तुमने जाना कि अस्हाबे कहेफ़-ओ-रक़ीम इन आयतों के मुक़ाबिल में एक अ़जीब वाक़ेआ है।) तिलावत करना और कोई एक मर्तबा नहीं बल्कि तमाम सफ़र में और दरबार में यअ्नी मशीयते इलाही थी कि ख़ूब अच्छी तरह पहचान लो! येह हुसैन वोह है जिस से रेसालते बालेग़ा का ख़ुर्शीद तुलूअ् हो कर ग़ुरूब नहीं होगा अगर इस मोजेज़ा के बाद भी आँख नहीं खुली तो आ़क़ेबत जहन्नम के अ़लावा और कुछ नहीं। चुनाँचे करबला से कूफ़ा और कूफ़ा से शाम का सफ़र, दरबारे इब्ने ज़ेयाद (लईन) से ले कर दरबारे यज़ीद तक येह कश्फ़े करामात बलाग़े मुबीन की आसमानी ताक़त से बेख़बरी और ग़फ़लत के पर्दों को हटा रहे थे और फिर अगर यक़ीन न आए तो ख़ुदा ने तो कह ही दिया है कि उन आँखों पर आहनी पर्दे डाल दिये हैं।

अफ़सोस इस बात का है कि येह रवायत सिर्फ़ उ़लमाए शीआ़ जैसे शैख़ुत्ताएफ़ा अ़ल्लामा तूसी, अ़ल्लामा मजलिसी, शैख़ सुदूक़ ने ही नहीं बयान किया है जिस की बेना पर दुश्मनाने अह्ले बैत अ़लैहिमुस्सलाम येह कहें कि अपनी तरफ़ से बर बेनाए अ़क़ीदत सुस्त रवायत को क़लमबंद किया है। बल्कि तमाम उ़लमाए केबारे अह्ले सुन्नत जैसे तबरी, मुसन्निफ़े तारीख़े मदीना-ओ-दमिश्क़, तफ़सीर इब्ने कसीर सुयूती, इब्ने हजर ने अपनी तारीख़ में सब ने इस वाक़ए् को नक़्ल किया है और अ़क़्ल के मारे उम्मते मुस्लेमा के अ़वाम सिर्फ़ तअ़ज्जुब से मुँह खोल कर सुन लेते हैं लेकिन वोह यक़ीन नहीं करते। सच है:

दे और दिल उनको जो न दे मुझ को ज़बाँ और,

अ़ल्लामा इक़बाल का यही रोना था काश मुसलमान भी एक होते। अ़ल्लामा मौसूफ़ ने अपनी वसीयत में अपने अ़क़ीदे की वज़ाहत कर दी कि वोह एक सुन्नी मज़हब के फ़र्द हैं और वही शहादते इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम पर नौहा गर होते हुए लिखते हैं

नक़्शे इल्लल्लाह हर सेहरा नविश्त

सत्र उ़नवाने नजाते मा नविश्त।

अल ग़रज़ फ़त्हे यज़ीद को जिसे इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की शिकस्त कहते हैं इस तरह रुसवा और ज़लील किया है कि उसकी सियाह रूई को लाख छिपाना चाहें लेकिन छिपाए न बनेगा। साहेबाने अ़क़्ल-ओ-इंसाफ़ अगर अपनी अ़क़्ली और मुन्सेफ़ाना सलाहियतों को ताक़े निसियाँ में डाल दें तो बक़ौल ग़ालिब उसे क्या कहिये? चार वाक़ेआत-ओ-हादेसात जो तारीख़ में रोज़े रोशन की तरह नुमायाँ हैं बड़ी दीदा-ओ-दिलेरी, ख़ुद राई और फ़िक्र की मुसीबत ज़दा उपज के साथ बग़ैर किसी मज़बूत सनद के मिटाने की कोशिश में साफ़ साफ़ सफ़े मुन्केरीन में आकर खड़े हो गए हैं।

(१) शिबली ने वाक़ेआए क़लम-ओ-क़िरतास के मुतअ़ल्लिक लिखा कि वाक़ेआ वक़ूअ पज़ीर नहीं हुआ। सय्यद अबुल हसन नदवी ने अल मुर्तज़ा में मौलाए काएनात की वेलादत ख़ानए कअ़बा में हुई इक़रार के साथ उसकी फ़ज़ीलत को फ़ज़ीलते अमीरुल मोमेनीन क़रार न देते हुए इन्कार करते हैं और एक घिसी पिटी किसी और की वेलादत का ज़िक्र करते हैं जिसका

जवाब नेहायत मज़बूत दलीलों के साथ अदीबुल हिन्दी ताब सराह ने अपनी किताब ''इमाम अ़ली'' में नेहायत वाज़ेह तौर पर दिया। ख़ुदा इब्ने तैमिया को न बख़्शे'' और बेशक कभी नहीं बख़्शेगा जिसने इन दो वाक़ेए को पसे पर्दा डालने की कोशिश की:

(अ) वाक़ेअए ग़दीर को जिस के मुतअ़ल्लिक़ लिखता है कि येह हदीसे ग़दीर आधी ज़ईफ़ है और आधी बातिल है।

(ब) वाक़ेआत और ह़ादेसात जो दरबारे यज़ीद, दमिश्क़ में गुज़रे जिस के लिए कहता है कि असीराने करबला और सरहाए शोहदाए करबला दमिश्क़ में लाए ही नहीं गए। (अगर ऐसा है तो वोह सब तारीख़ें जो सुन्नी उ़लमा ने लिखी हैं उन्हें उनके क़लम फ़िक्र और हक़ शेनासी के मुन्किर की हैसियत से नज़रे आतश उनके वजूद के साथ क्यों नहीं समझते।

ख़ुलासा: मुंदरजा ज़ैल अ़वामिल वोह भरपूर असबाब-ओ-एलल फ़राहम करते हैं जिन से यज़ीद की फ़त्ह को इस्लाम की बीख़ कनी की सइ्ये ला हासिल की बेना पर ऐसी शिकस्ते फ़ाश मुहाफ़ेज़ाने इस्लाम ने दी है जो आग़ाज़े साले इस्लामी के दस रोज़ तक बबाँगे दोहल आज चौदह सौ बरस से मनाई जाती है। और यज़ीद-ओ-हामियाने यज़ीद और ख़ाएन और नाम नेहाद उ़लमा के शोर-ओ- ग़ोग़ा को उनके गले की ही फांस बना कर डाल दी जाती है।

(१) इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम का सरबुरीदा नेज़े पर बुलंद होकर सूरए कहेफ़ की तिलावत करना।

(२) ख़ुत्बए इमाम सज्जाद अ़लैहिस्सलाम, ख़ुत्बए जनाब ज़ैनब कुबरा सलामुल्लाह अ़लैहा

(३) इमाम सज्जाद अ़लैहिस्सलाम का इस्तेदलाल क़ुरआन की आ़यतों के साथ

(४) अक़ामए अ़ज़ा-ओ-नौहा, शहज़ादियों के साथ ज़नाने दमिश्क़ का।

ज़माना गुज़रता गया। एक सदी अपने आसार-ओ-बरकात, हादेसात-ओ-वाक़ेआत, इब्तेला और इम्तेहान की वोह दास्तान जो करबला में ६१ हि॰ के शुरू होते ही वक़ूअ् पज़ीर हुई थी हर साल उसका ग़म, उसका दर्द, उसकी कराहती हुई दिलसोज़ आवाज़ें तमाम गोशाहाए आ़लम से माहे मोहर्रम के आग़ाज़ में सुनाई देने लगती हैं। और क्यों न हो फ़रज़ंदे हुसैन इमामे अ़स्र अ़लैहिस्सलाम ग़ैबत में मअ़्लूम नहीं कितने राज़हाए सरबस्ता का अमीन है जिसके सरे फ़ेहरिस्त बरनामों में इन्तेक़ामे ख़ूने हुसैन जेली हर्फ़ों से दर्ज है और हर साल वोह अपनी तमाम सोगवारियत के साथ तमाम अ़ज़ादारों का पुर्सा क़ुबूल करता है। उसकी ख़ेलाफ़ते इलाहिया का दरबार सजा है। ऐसा लगता है कि जब क़स्रे यज़ीद में उस वक़्त का ज़िक्र आया होगा तो हर साल आप के दरबार में कोहराम मच जाता होगा। वोह कौन सा वक़्त होगा क़ारेईने केराम भी दिल थाम कर सुन लें। जब सरे इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम क़स्रे यज़ीद में लाया गया तो उस सरे मुबारक को आ़तेका बिन्ते यज़ीद और मादरे यज़ीद इब्ने अ़ब्दुल मलिक ने उस सरे मुबारक को धोया और ख़ुश्बू लगाई और बच्चों और बीबियों ने उसकी ज़ेयारत की उम्मुल मसाएब आ़क़ेलए बनी हाशिम, पैकरे सब्र-ओ-रज़ा ने भाई के रुख़्सार पर अपना रुख़्सार रख कर जब गिरिया किया होगा तो कैसा दिलसोज़ मंज़र रहा होगा। या अल्लाह मेरे वली और सरपरस्त इमाम के सामने जब वोह वाक़ेआ आए तो अपनी किब्रियाई के सदक़े में उनकी नुसरत फ़रमाना और हम सब को उनके अअ़्वान-ओ-अंसार में शुमार फ़रमा।

..... सफ़हा न० ३४ का बाक़ी

अफ़सोस है उस मज़ारे सलीम चिश्ती (रह्मतुल्लाह अ़लैह) पर गरोह दर गरोह दूर दराज़ के फ़ासलों को तै करते हुए हरी और सुर्ख़ चादरें क़ब्र पर चढ़ाने के लिए ज़ाएर चले आते हैं लेकिन येह नहीं सोचते कि येह शरफ़ येह मंज़ेलत, येह कश्फ़-ओ-करामात, येह मोजिज़नुमाई अल्लाह तबारक-ओ-तआ़ला ने किस के तुफ़ैल में और किन काविशों की सिलह(सिला) में अ़ता फ़रमाई हैं। अकबरे अअ़ज़म शहेंशाहे हिन्द ने एक औलाद मांगी थी सिर्फ़ एक औलाद ,अगर उस औलाद से बक़ाए सलतनत मांगी होती तो शायद वोह भी मिल जाता, वोह उसको अ़ता की गई लेकिन अगर ज़रा हुसैन अ़लैहिस्सलाम का वास्ता दे कर बक़ाए सलतनत माँग लिया होता तो अ़हद ब अ़हद मुग़लिया बादशाह उ़रूज से ज़वाल की तरफ़ न ढलकती। हुसैन हुसैन हैं। करबला में अपने ख़ुत्बे में कई मर्तबा फ़रमाया अगर तुम लोग सवाली बन कर आए होते तो ऐ गरोहाने अश्क़िया मैं मेरे बैतुश्शरफ़ में ख़िदमत गुज़ार मलाएका के पर, उनकी ख़ुश्बू से तुम्हारी बंद आँखों को खोल देता।

आज इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम की ज़रीहे मुबारक के पास एक जगह मुअ़य्यन है। दो रकअ़त नमाज़ के बाद उस जगह ह़ाजत मंद पहली दुआ अल्लाह की बारगाह में करेगा उसकी क़ुबूलियत की ज़मानत मौला हुसैन अ़लैहिस्सलाम ने ली है। करबला का येह शरफ़,येह अ़ज़मत, येह बुज़ुर्गी, येह कमाल, येह मोजिज़ा, येह मुह़य्यरुल उ़क़ूल दअ़्वा, येह राबेतए आसमानी, येह लौहे क़लम की तहरीर पर तहरीक की क़ुदरत एक आ़म एअ़्लान है जो तमाम दुनिया में जहाँ जहाँ हुसैन अ़लैहिस्सलाम के मानने वाले हैं सब जानते हैं। कोई छिपी ढकी बात नहीं इस एअ़्लान में कोई इख़्तेसास नहीं है। शाह हो या गदा सिर्फ़ इतनी सी शर्त है कि दिल हुसैन अ़लैहिस्सलाम की मोहब्बत का मकीन हो। कभी उस के दो क़तरे आँसू के रूमाले मादरे हुसैन अ़लैहिस्सलाम में जगह रखते हों। आज लाखों का मज्मअ़् है जो ज़रीहे अक़दस के पास टूटा पड़ रहा है। हर अ़क़ीदतमंद की पहली दुआ क़ुबूल होती है कोई दामन ख़ाली वापस नहीं आता कोई सुल्तान को ज़रूरत नहीं है कि पा ब ज़ंजीर चले, दस्त रसन बस्ता चले, सर नंगे चले या पेयादा चले, अश्क रेज़ाँ चले, ख़ाक ब सर चले, दिल परेशान चले नहीं नहीं येह उस करीम आक़ा का दरबार है जहाँ चाहने वालों के क़ाफ़ले बस चले आ रहे हैं। चारों तरफ़ या हुसैन या हुसैन की आवाज़ गूँज रही है। ऐ हम सब के प्यारे हुसैन ख़ाजा ने आप को दीन ही नहीं बल्कि दीं पनाह भी कहा इस तकरार का राज़ क्या है। शायद जवाब मिले अ़ली असग़र की नन्ही सी ज़बान सूखे होंटों पर फिरती हुई, जला हुआ झूला रबाब की असासे हयात, सकीना का जला हुआ कुरता, क़ासिम का टुकड़े हुए जनाज़ा, अ़ली अकबर के सीने से उबलता हुआ ख़ून, अ़ब्बास के कटे हाथ, हुसैन का नोके नेज़ा पर बलंद सर तारीख़ बोल रही है कि बहुत से और ग़ुलामों की रोज़े आ़शूरा ईसार-ओ-क़ुर्बानी, सईद का छलनी कलेजा, ज़ुहैर क़ैन की शहादत, ह़बीब-ओ-शबीब जैसे जाँ निसारों की शुजाअ़त -ओ- दिलेरी, हुर के ज़ख़्मी सर पर रूमाले ज़हरा सलामुल्लाहेअलैहा ,हज़रत आ़बिद अ़लैहिस्सलाम की ज़ंजीरों के साथ सज्दए मअ़्बूद में शुक्र गुज़ारी, कूफ़ा-ओ-शाम के दरबार में ज़ुल्म के चेहरे को सियाह कर देने वाली मज़लूमियत और उम्मुल मसाएब जनाब ज़ैनब अ़लैहस्सलाम के ख़ुत्बे। एक फ़ेहरिस्त है उस लश्कर की जो दीने इस्लाम की पनाह गाह के लिए ता सुब्हे क़यामत काफ़ी है जिस फ़ेहिरस्त के सरे वरक़ हुसैन की आख़री वसीयत जो अपनी बहेन से की है ब उ़नवाने जली लिख दी गई है ''बहन मुझे नमाज़े शब में कभी फ़रामोश न करना।''

हो सकता है कुछ लोगों को राहिब के वाक़ेए की सनदियत पर एअ़्तेराज़ हो लेकिन सय्यदुश शोहदा नवासए रसूल, नूरे ऐने बतूल ख़ालिक़ की बारगाह में इस क़द्र अ़ज़ीम हैं कि उनकी बात टाली नहीं जाती है।

ज़िंदगी है बर सरे आतश फ़ेशानी या हुसैन
आग दुनिया में लगी है आग पानी या हुसैन

..... सफ़हा न० १ का बाक़ी

मस्जिद नमाज़ गुज़ारों से भरी हुई है। मस्जिदे नबवी के पाकीज़ा सहेन में अल्लाह तआला का महबूब नबी जल्वा अफ़रोज़ है। ज़ानू पर नवासए रसूल जिसका इस्मे गेरामी हुसैन अलैहिस्सलाम है तशरीफ़ फ़रमा है। एक शख़्स एक अरब राहिब दाख़िल मस्जिद हुआ दो ज़ानू करीम आक़ा के हुज़ूर में बैठ गया। उसके पास सब कुछ था और कुछ भी नहीं था साहबे दौल था। बड़ा सा घर जिस में कई कमरे, सामने सहेन और पाईन बाग़ भी, असबाबे रिज़्क़ कसीर थे। मुलाज़िम और ग़ुलाम भी थे। लेकिन बिन औलाद गोया कुछ भी नहीं था। सहेन और कमरों में सन्नाटों का बसेरा था। ज़िंदगी सपाट गुज़र रही थी न क़हक़हे गूंज रहे थे न औलाद की मोहब्बत में दिल की कसक करवटें ले रही थी। जीना है इस लिए जी रहे हैं मरना है इस लिए मर जाएंगे। वोह कहता होगा येह भी कोई ज़िंदगी है ग़म की मारी ज़िंदगी हुज़ूरे सरवरे काएनात के हुज़ूर में अपनी सारी मायूसियाँ समेट कर हाजत रवा के पास अपनी हाजत बयान कर रहा है। ऐ अल्लाह के नबी मेरी ज़िंदगी सहरा और बयाबानों की तरह ख़ामोश है उसे आबाद कर दीजिए। मैं राहिब हूँ लेकिन ऐसा लगता है किसी ग़ैबी ताक़त ने मुझे यहाँ तक पहुंचा दिया है। एक औलाद की तमन्ना है।आप अगर अल्लाह के हबीब और रसूल हैं आप दुआ करेंगे तो ज़रूर क़ुबूल होगी और एक औलाद से मेरा घर ख़ुशियों का गहवारा बन जाएगा।

मुरसले अअ्ज़म ने ग़ैब के पर्दों को हटाया उस की तक़दीर का लिखा पढ़ा। जवाब दिया तेरी क़िस्मत में औलाद नहीं है। कातिबे तक़दीर ने तेरे मुक़द्दर में औलाद नहीं तहरीर किया है ज़ानू पर बैठे हुए हुसैन ने नाना का चेहरा देखा। कहा होगा राहे ख़ुदा में शहादतों की तवील फ़ेहरिस्त रखने वाले के सामने से साएल ख़ाली हाथ जा रहा है। येह मुझे गवारा नहीं और लब कुशा हुआ। नाना मैंने उसे एक औलाद अता की नाना ने जवाब में कहा मेरे दिलबंद उसके मुक़द्दर में औलाद नहीं है। हुसैन अलैहिस्सलाम ने जवाब दिया नाना मैंने दो औलाद दिये जब नाना और नवासे की बात सात औलाद तक पहुंच गई साएल ने कहा ऐ मेरे हुसैन मेरा दामन मुरादों से भर गया। ज़माना गुज़रता गया साएल की सात औलाद जवान हो गईं। ऐ हिन्दुस्तान की मश्रिक़ से मग़रिब तक फैली हुई ज़मीन पर हुकूमत करने वाले अज़ीम शहेंशाह तू ज़मीन के एक ख़ित्ते पर हुकूमत करना एक अहद और कुछ ज़माने के दौर तक ही जानता है तू क्या जाने जहाँ तू एक फ़क़ीर और साएल की सूरत पा बज़ंजीर चला जा रहा है सिर्फ़ इतने कम शऊर के उजाले में जानता है कि वोह ख़ुदा रसीदा बंदा है। महबूबे बारगाहे इलाही है लेकिन येह नहीं जानता वोह जिस के आगे दामन फैलाए खड़ा है वोह बशर है यअ्नी उसकी ख़िल्क़त बशरी-ओ-ख़ाकी है किसी की मोहब्बत में डूब कर उभरा तो वोह ऐसा बन गया जिसके दर पर अज़मते सुल्तानी और सतवते शाही का ताज सर से उतार कर उसके मज़ार पर जारूब कशी करते हैं। यक़ीन न हो तो उसके मज़ार पर जिसकी मोहब्बत ने ज़र्रे से आफ़ताब बना दिया झूम झूम के जो शेअ्र पढ़ता था आज तक लिखा हुआ है। काफ़ी था अगर वोह कह देता हुसैन अलैहिस्सलाम दीन (इस्लाम) हैं मगर नहीं आगे कहता जा रहा है दीन (इस्लाम) की पनाहगाह हैं। ऐ आलमे इस्लाम के मुसलमानों कान धर के सुनो अक़्ल-ओ-ख़ेरद को तकान दो सिर्फ़ दीन की पनाहगाह कह कर इक्तेफ़ा नहीं किया बल्कि मोहब्बते हुसैन अलैहिस्सलाम में सरशार हक़ीक़त आशना मलकूती बस्तियों का सय्याह क़ुर्बे इलाही की मंज़िल की तरफ़ जाने वाला मुसाफ़िर हुसैन की ख़िल्क़ते नूरी की किताब का मुतअल्लिम मअ्रेफ़ते क़ुदरते खुदावंदी में ख़ल्लाक़े आलम का शाहकार ख़िल्क़ते हुसैनी के नूर से जब एक नूर की किरन ने वेलायते तकवीनी की रोशनी देखी तो मुतह्य्यर हो कर कह उठा। हक़्क़ा कि बेनाए ला इलाह अस्त हुसैन,क़सम है हक़ की ला इलाह की बेना है हुसैन।

.....बाक़ी सफ़हा न० ३३ पर